AARABI KE SUWALAT AUR ARABI AAQA KE JAWABAT (HINDI)

DAWAT-E-ISLAMI

आ'राबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा ﷺ के जवाबात

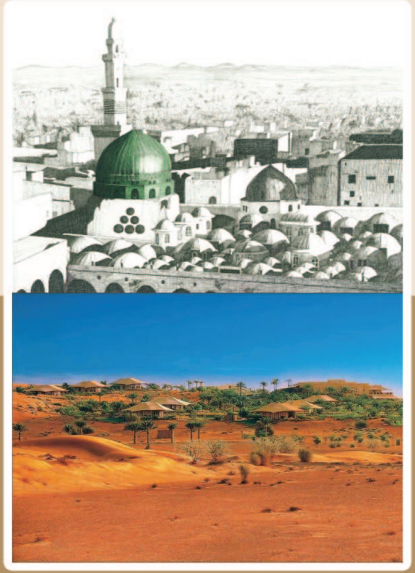

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = ُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हिकायत : 1 बादशाह तन्दुरुस्त हो गया

बादशाह हारून रशीद एक मरतबा बीमार हो गया, बहुत इ़लाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी ह़ालत में छे महीने गुज़र गए । एक दिन इसे पता चला कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस के मह़ल के दरवाज़े के सामने से गुज़र रहे हैं, बादशाह ने अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की । जब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى तशरीफ़ लाए तो उसे देख कर फ़रमाया : "फ़िक्र न करो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से आज ही आराम आ जाएगा ।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दुरूदे पाक पढ़ कर बादशाह के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गया । (راحت القلوب (فارسی)، ص ۵۰)

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد
ता'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 2 आ'राबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा ﷺ के जवाबात

ह़ज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى त़लबे इ़ल्म के लिये मिस्र गए, वहां पर उन्हों ने ह़दीस के बहुत बड़े

आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से ह़दीसे ख़ालिद बिन वलीद (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) सुनाने की दरख़्वास्त की तो उन्हों ने मुझे एक साल के रोज़े रखने का हुक्म फ़रमाया। उन के इस हुक्म पर अ़मल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى दोबारा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपनी सनद से ह़दीसे ख़ालिद बिन वलीद (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) सुनाई। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक आ'राबी (या'नी अ़रब शरीफ़ के देहाती) ने बारगाहे रिसालत मआब में ह़ाज़िरी दी और **अ़र्ज़** की : दुन्या व आख़िरत के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं तो **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **इरशाद** फ़रमाया : पूछो ! जो पूछना चाहते हो।

आने वाले ने **अ़र्ज़ की :** मैं सब से बड़ा आ़लिम बनना चाहता हूं।

मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह** से डरो, सब से बड़े आ़लिम बन जाओगे।

अ़र्ज़ की : मैं सब से ज़ियादा ग़नी बनना चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : क़नाअ़त इख़्तियार करो, ग़नी हो जाओगे।

अ़र्ज़ की : मैं लोगों में सब से बेहतर बनना चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : लोगों में सब से बेहतर वोह है जो दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाता हो, तुम लोगों के लिये नफ़्अ़ बख़्श बन जाओ।

अ़र्ज़ की : मैं चाहता हूं कि सब से ज़ियादा अ़द्ल करने वाला बन जाऊं ।

इरशाद फ़रमाया : जो अपने लिये पसन्द करते हो वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करो, सब से ज़ियादा आ़दिल बन जाओगे ।

अ़र्ज़ की : मैं बारगाहे इलाही में ख़ास मक़ाम ह़ासिल करना चाहता हूं ।

इरशाद फ़रमाया : ज़िक्रुल्लाह की कसरत करो, **अल्लाह** तआ़ला के ख़ास बन्दे बन जाओगे ।

अ़र्ज़ की : अच्छा और नेक बनना चाहता हूं ।

इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की इ़बादत यूं करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तो तुम्हें देख ही रहा है ।

अ़र्ज़ की : मैं कामिल ईमान वाला बनना चाहता हूं ।

इरशाद फ़रमाया : अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो, कामिल ईमान वाले बन जाओगे ।

अ़र्ज़ की : (**अल्लाह** तआ़ला का) फ़रमां बरदार बनना चाहता हूं ।

इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के फ़राइज़ का एहतिमाम करो, उस के मुत़ीअ़ (व फ़रमां बरदार) बन जाओगे ।

अ़र्ज़ की : (रोज़े क़ियामत) गुनाहों से पाक हो कर **अल्लाह** तआ़ला से मिलना चाहता हूं ।

इरशाद फ़रमाया : ग़ुस्ले जनाबत ख़ूब अच्छी त़रह़ किया करो, **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल में मिलोगे कि तुम पर कोई गुनाह न होगा ।

अ़र्ज़ की : मैं चाहता हूं कि रोज़े क़ियामत मेरा ह़श्र नूर में हो।

इरशाद फ़रमाया : किसी पर ज़ुल्म मत करो, तुम्हारा ह़श्र नूर में होगा।

अ़र्ज़ की : मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला मुझ पर रह़्म फ़रमाए।

इरशाद फ़रमाया : अपनी जान पर और मख़्लूक़े ख़ुदा पर रह़्म करो, **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाएगा।

अ़र्ज़ की : गुनाहों में कमी चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो, गुनाहों में कमी होगी।

अ़र्ज़ की : ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला बनना चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : लोगों के सामने **अल्लाह** तआ़ला के बारे में शिकवा व शिकायत मत करो, सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़तदार बन जाओगे।

अ़र्ज़ की : रिज़्क़ में कुशादगी चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : हमेशा बा वुज़ू रहो, तुम्हारे रिज़्क़ में फ़राख़ी आएगी।

अ़र्ज़ की : **अल्लाह** व रसूल का मह़बूब बनना चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** व रसूल की मह़बूब चीज़ों को मह़बूब और ना पसन्द चीज़ों को ना पसन्द रखो।

अ़र्ज़ की : **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी से अमान का त़लबगार हूं।

इरशाद फ़रमाया : किसी पर गुस्सा मत करो, **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी से अमान पा जाओगे।

अ़र्ज़ की : दुआ़ओं की क़बूलिय्यत चाहता हूं।

इरशाद फ़रमाया : ह़राम से बचो, तुम्हारी दुआ़एं क़बूल होंगी।

अ़र्ज़ की : चाहता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे लोगों के सामने रुस्वा न फ़रमाए।

इरशाद फ़रमाया : अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करो, लोगों के सामने रुस्वा नहीं होगे।

अ़र्ज़ की : चाहता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी पर्दापोशी फ़रमाए।

इरशाद फ़रमाया : अपने मुसलमान भाइयों के ऐ़ब छुपाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी पर्दापोशी फ़रमाएगा।

अ़र्ज़ की : कौन सी चीज़ मेरे गुनाहों को मिटा सकती है ?

इरशाद फ़रमाया : आंसू, आ़जिज़ी और बीमारी।

अ़र्ज़ की : कौन सी नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल है ?

इरशाद फ़रमाया : अच्छे अख़्लाक़, तवाज़ोअ़, मसाइब पर सब्र और तक़्दीर पर राज़ी रहना।

अ़र्ज़ की : सब से बड़ी बुराई क्या है ? कौन सी बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ी है ?

इरशाद फ़रमाया : बुरे अख़्लाक़ और बुख़्ल।

अ़र्ज़ की : **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब को क्या चीज़ ठन्डा करती है ?

इरशाद फ़रमाया : चुपके चुपके सदक़ा करना और सिलए रेह़्मी।

अ़र्ज़ की : कौन सी चीज़ दोज़ख़ की आग को बुझाती है ?

इरशाद फ़रमाया : रोज़ा। (جامع الاحادیث،۱۹/۴۰۵، حدیث:۱۴۹۲۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीस के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का शौक़े इल्म मरह़बा कि एक ह़दीस सुनने के लिये एक साल के रोज़े रखने की मदनी फ़ीस अदा करने पर तय्यार हो गए[1] । इस में उन इस्लामी भाइयों के लिये दर्स है जो फ़ी ज़माना आसान मवाक़ेअ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद इल्मे दीन सीखने से जी चुराते हैं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नसीह़त व ह़िक्मत के 25 मदनी फूल

मज़्कूरा बाला सुवालात व जवाबात से हमें नसीह़त व ह़िक्मत के बे शुमार मदनी फूल चुनने को मिलते हैं, आइये ! **"ह़ुसूले इल्मे दीन"**, **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** जैसी अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इन मदनी फूलों की ख़ुश्बू अपने दिलो दिमाग़ में बसाते हैं, चुनान्चे,

(1) सुवाल पूछने की इजाज़त त़लब की

आ'राबी ने सब से पहला सुवाल तो येह किया कि मैं दुन्या व आख़िरत के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं, इस से हमें येह भी सीखने को मिला कि जब किसी आ़लिमे दीन से कोई सुवाल करना

1.....ईदुल फ़ित्र के दिन और 10, 11, 12, 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रोज़ा रखना मकरूहे तह़रीमी है । (बहारे शरीअ़त, 1 / 967, دُرِّ مُخْتار وردالمحتار،٣٩١/٣)

www.dawateislami.net

हो तो अदबन पहले उस से सुवाल पूछने की इजाज़त त़लब कर ली जाए । इ़ल्मे दीन के हुसूल में सुवाल की बड़ी अहम्मिय्यत है, **सुवाल को इ़ल्म की चाबी** क़रार दिया गया है चुनान्चे,

सुवाल इ़ल्म की चाबी है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : **इ़ल्म ख़ज़ाना है और सुवाल उस की चाबी है, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए सुवाल किया करो क्यूंकि इस (या'नी सुवाल करने की सूरत) में चार अफ़राद को सवाब दिया जाता है । सुवाल करने वाले को, जवाब देने वाले को, सुनने वाले और उन से मह़ब्बत करने वाले को । (فردوس الاخبار، ٢/٨٠، حديث: ٤٠١١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़ल्म में इज़ाफ़े का राज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : इ़ल्म में ज़ियादती तलाश से और वाक़िफ़िय्यत सुवाल से होती है तो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं उस के बारे में जानो और जो कुछ जानते हो उस पर अ़मल करो । (جامع بيان العلم وفضله، ص١٢٢، رقم: ٤٠٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से किसी ने अ़र्ज़ की : आप ने इतना इ़ल्म किस त़रह़ ह़ासिल किया ? फ़रमाया : सुवालात की कसरत और अहम बातों को अच्छी त़रह़ याद रखने की वज्ह से । (جامع بيان العلم وفضله، ص١٢٦، رقم: ٤١٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सुवाल पूछने से न शर्माएं

इ़ल्म सीखने के लिये सुवाल पूछने से शर्माना नहीं चाहिये कि लोग क्या सोचेंगे कि इस को इतनी बुन्यादी बात भी मा'लूम नहीं या इस की इतनी उ़म्र हो गई अभी तक इस को येह मस्अला नहीं पता ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر फ़रमाया करते थे : बहुत कुछ इ़ल्म मुझे ह़ासिल है, लेकिन जिन बातों के सुवाल से मैं शर्माया था उन से इस बुढ़ापे में भी जाहिल हूं। (جامع بيان العلم وفضله،ص١٢٦،رقم: ٤١٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल करने के आदाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : आ़लिम के ह़क़ में से है कि उस से बहुत ज़ियादा सुवाल न किये जाएं और उस से जवाब लेने में सख़्ती न करे और जब उसे सुस्ती लाह़िक़ हो तो जवाब लेने के लिये उस के पीछे न पड़ जाए और जब वोह उठे तो उस के कपड़ों को न पकड़े। (الفقيه والمتفقه،٢/١٩٨،رقم:٨٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 3 ख़ामोशी हिक्मत है

ऐसे सुवालात करने से भी बचा जाए जिस का दुन्यावी या उख़रवी फ़ाएदा न हो, बा'ज़ औक़ात सुवाल के बिग़ैर ही मत़लूबा मा'लूमात ह़ासिल हो जाती हैं चुनान्चे, एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, उस वक़्त आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़िरह बना रहे थे और चूंकि आप ने उस से पहले ज़िरह नहीं देखी थी इस लिये उसे देख कर तअ़ज्जुब करने लगे और इस बारे में सुवाल करना चाहा मगर ह़िक्मत के सबब सुवाल करने से बाज़ रहे । जब ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़िरह बनाने से फ़ारिग़ हुवे तो खड़े हुवे और उसे पहन कर इरशाद फ़रमाया : जंग के लिये ज़िरह क्या ही अच्छी चीज़ है ! येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ख़ामोशी ह़िक्मत है मगर इस को इख़्तियार करने वाले कम हैं, या'नी सुवाल के बिग़ैर ही इस के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म हो गया और सुवाल की ह़ाजत न रही ! मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक साल तक **ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की बारगाह में इस इरादे से ह़ाज़िर होते रहे कि उन्हें ज़िरह के बारे में बिग़ैर सुवाल किये मा'लूम हो जाए** !!!

(احیاء علوم الدین،کتاب آفات اللسان،باب عظیم خطر ۔الخ،۳/۱۴۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 4 बम्बई के मकान का भाव कैसे पता चला ?

शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : बरसों पहले की बात है मदनी क़ाफ़िले के साथ बम्बई (अल हिन्द) गया था, मैं ने सुन रखा था कि बम्बई में मकानात बहुत ज़ियादा महंगे होते हैं, किसी के फ़्लेट में क़ियाम हुवा, दिल में ख़्वाहिश होती थी कि पूछूं कि आप ने फ़्लेट कितने में लिया है ? मगर उन दिनों मुझे ज़बान के कुफ़्ले मदीना का काफ़ी शौक़ था, लिहाज़ा न पूछा क्यूंकि पूछना बे फ़ाएदा था, मुझे मकान ख़रीदना तो था नहीं, ख़ैर, इत्तिफ़ाक़ से साह़िबे ख़ाना ने ख़ुद ही बता दिया कि हम ने येह मकान इतने करोड़ में लिया है । यूं कुफ़्ले मदीना का भरम भी रह गया और दिल का बोझ भी उतर गया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत

आ'राबी का दूसरा सुवाल था कि मैं सब से बड़ा आ़लिम बनना चाहता हूं । **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** से डरो, सब से बड़े आ़लिम बन जाओगे ।

इ़ल्म वाले अल्लाह से डरते हैं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुरआने करीम में फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ (پ ۲۲ فاطر ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی लिखते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि उ़लमा अहले ख़शिय्यत (या'नी **अल्लाह** तआ़ला से डरने वालों) में से हैं और अहले ख़शिय्यत की जज़ा जन्नत है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

جَزَآؤُھُمْ عِنْدَ رَبِّھِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِھَا الْاَنْھٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْھَآ اَبَدًا ؕ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ ؕ ذٰلِکَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّہٗ ﴿۸﴾ (پ ۳۰ البینۃ: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन का सिला उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे।

ह़दीस में भी आया कि मह़बूबे रब्बे जुल जलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ नहीं करूंगा और न उस के लिये दो अम्न जम्अ़ करूंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहे तो मैं क़ियामत के दिन उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरता रहे तो मैं बरोज़े क़ियामत उसे अम्न में रखूंगा।

(شعب الایمان ۱ / ۴۸۳ حدیث ۷۷۷)(تفسیر رازی ۱۰ / ۴۰۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिक्मत की अस्ल

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللّٰهِ **तर्जमा :** हिक्मत की अस्ल **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ है ।"

(شعب الایمان ،باب فی الخوف من الله تعالیٰ ،۱۰/۴۷۰،حدیث ۷۴۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़ के दरजात

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की तह़क़ीक़ की रोशनी में ख़ौफ़ के तीन दरजात हैं : ﴿**पहला**﴾ **ज़ईफ़ (या'नी कमज़ोर) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत न रखता हो मसलन जहन्नम की सज़ाओं के ह़ालात सुन कर मह़ज़ झुर झुरी ले कर रह जाना और फिर से ग़फ़्लत व मा'सियत में गिरिफ़्तार हो जाना ﴿**दूसरा**﴾ **मो'तदल (या'नी मुतवस्सित़) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत रखता हो मसलन अ़ज़ाबे आख़िरत की वई़दों को सुन कर उन से बचने के लिये अ़मली कोशिश करना और उस के साथ साथ रब तआ़ला से उम्मीदे रह़मत भी रखना ﴿**तीसरा**﴾ **क़वी (या'नी मज़बूत़) :** येह वोह ख़ौफ़ है, जो इन्सान को ना उम्मीदी, बेहोशी और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला कर दे । मसलन **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब वग़ैरा का सुन कर अपनी मग़फ़िरत से ना उम्मीद हो जाना ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन सब में बेहतर दरजा "मो'तदल" है क्यूंकि ख़ौफ़ एक ऐसे ताज़ियाने (कोड़े) की मिस्ल है जो किसी जानवर को तेज़ चलाने के लिये मारा जाता है, लिहाज़ा ! अगर उस ताज़ियाने की ज़र्ब इतनी "ज़ईफ़" हो कि जानवर की रफ़्तार में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा न हो तो उस का कोई फ़ाएदा नहीं, और अगर येह ज़र्ब इतनी "क़वी" हो कि जानवर उस की ताब न ला सके और इतना ज़ख़्मी हो जाए कि उस के लिये चलना ही मुमकिन न रहे तो येह भी नफ़्अ़ बख़्श नहीं, और अगर येह "मो'तदल" हो कि जानवर की रफ़्तार में भी ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हो जाए और वोह ज़ख़्मी भी न हो तो येह ज़र्ब बेहद मुफ़ीद है ।

(ماخوذ من احیاء علوم الدین،کتاب الخوف والرجاء،بیان درجات الخوف۔الخ، ۱۹۲/٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़लामात

हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की अ़लामत आठ चीज़ों में ज़ाहिर होती है :

(1) **इन्सान की ज़बान में :** वोह इस त़रह़ कि रब तआ़ला का ख़ौफ़ उस की ज़बान को झूट, ग़ीबत, फ़ुज़ूल गोई से रोकेगा और उसे ज़िक्रुल्लाह, तिलावते क़ुरआन और इ़ल्मी गुफ़्तगू में मश्ग़ूल रखेगा ।

(2) **उस के शिकम में :** वोह इस त़रह़ कि वोह अपने पेट में ह़राम को दाख़िल न करेगा और ह़लाल चीज़ भी ब क़दरे ज़रूरत खाएगा ।

(3) **उस की आंख में :** वोह इस त़रह़ कि वोह उसे ह़राम देखने से बचाएगा और दुन्या की त़रफ़ रग़बत से नहीं बल्कि ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये देखेगा ।

(4) **उस के हाथ में :** वोह इस त़रह़ कि वोह कभी भी अपने हाथ को ह़राम की जानिब नहीं बढ़ाएगा बल्कि हमेशा इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस्ति'माल करेगा ।

(5) **उस के क़दमों में :** वोह इस त़रह़ कि वोह उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी में नहीं उठाएगा बल्कि उस के हुक्म की इत़ाअ़त के लिये उठाएगा ।

(6) **उस के दिल में :** वोह इस त़रह़ कि वोह अपने दिल से बुग़्ज़, कीना और मुसलमान भाइयों से ह़सद करने को दूर कर दे और उस में ख़ैर ख़्वाही और मुसलमानों से नर्मी का सुलूक करने का जज़्बा बेदार करे ।

(7) **उस की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में :** इस त़रह़ कि वोह फ़क़त़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये इ़बादत करे और रिया व निफ़ाक़ से ख़ाइफ़ रहे ।

(8) **उस की समाअ़त में :** इस त़रह़ कि वोह जाइज़ बात के इ़लावा कुछ न सुने । (درۃ الناصحین،المجلس الثلاثون،ص۱۰۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बीमार दिखाई देते

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को लोग बीमार ख़याल करते हुवे उन की इ़यादत करने के लिये आया करते थे ह़ालांकि उन की येह ह़ालत सिर्फ़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से हुवा करती थी ।

(منہاج القاصدین،کتاب الرجاءوالخوف،ذکر خوف داود و بکائہ،ص۱۱۷۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िरिश्तों का ख़ौफ़

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र यज़ीद बिन अबान रक़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : बिलाशुबा अ़र्श के गिर्द कुछ फ़िरिश्ते हैं जिन की आंखें नह्रों की त़रह़ क़ियामत तक जारी रहेंगी। वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ऐसे कांपते हैं जैसे शदीद हवा उन्हें हिला जुला रही हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! मेरी बारगाह में होते हुवे तुम्हें किस चीज़ का ख़ौफ़ है ? अ़र्ज़ करते हैं : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत जो हमें मा'लूम है अगर ज़मीन वालों को मा'लूम हो जाए तो खाना-पानी उन के ह़ल्क़ से न उतरे, बिस्तरों पर लेट न पाएं, सह़राओं में निकल जाएं और गाए की त़रह़ डकराएं।

(منهاج القاصدين،كتاب الرجاء والخوف،ذكر خوف الملائكة،ص١١٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 5 उम्मुल मोमिनीन का ख़ौफ़े ख़ुदा

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरी आ़दत थी कि मैं सुब्ह़ उठ कर सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को सलाम करता। एक दिन सुब्ह़ उठा तो देखा आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا चाश्त की नमाज़ में मश्ग़ूल हैं और इस आयते मुबारका :

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ (پ۲۷، الطور: ۲۷)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो **अल्लाह** ने हम पर एह़सान किया और हमें लू के अ़ज़ाब से बचा लिया) की बार बार तिलावत कर के रोए जा रही हैं। मैं फ़राग़त के इन्तिज़ार में खड़े खड़े थक गया, लेकिन आप ब दस्तूर इसी ह़ालत में रहीं। फिर मैं बाज़ार चला गया ताकि ज़रूरत की चीज़ें ले कर आ जाऊं। वापस आ कर देखा तो आप मुसलसल वोही आयते मुबारका पढ़ रही हैं और रोए जा रही हैं। (احیاء علوم الدین،کتاب المراقبة والمحاسبة،۵/ ۱۴۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 6 ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले के साथ निकाह़ कर दो

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से इस्तिफ़्सार किया : मेरी एक बेटी है, आप के ख़याल में उस का निकाह़ किस के साथ करना चाहिये ? इरशाद फ़रमाया : उस का निकाह़ ऐसे शख़्स से करो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला हो, ऐसा शख़्स अगर उस से मह़ब्बत करेगा तो उस की इ़ज़्ज़त करेगा और अगर उसे ना पसन्द करेगा तो भी उस पर ज़ुल्म नहीं करेगा।[1]

(المستطرف،الباب الثالث والسبعون،۲/ ۳۹۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....मज़ीद रिवायात व ह़िकायात और दीगर मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

(3) ग़नी बनने का त़रीक़ा

आ'राबी का तीसरा सुवाल येह था कि मैं सब से ज़ियादा ग़नी बनना चाहता हूं। ताजदारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़नाअ़त इख़्तियार करो, ग़नी हो जाओगे।

क़नाअ़त का मत़लब

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम पर राज़ी रहना, जो मिले उसी को काफ़ी समझना **क़नाअ़त** है। (التعريفات،ص ١٢٦وكيميائے سعادت،١/ ١٤٩) मसलन किसी की रोज़ाना आमदनी 500 रूपे हो जिस में उस की ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी हो जाती हों तो उसी आमदनी पर मुत़मइन हो जाना मज़ीद की ख़्वाहिश से बचना क़नाअ़त है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कामयाबी का रास्ता

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया, ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे दिये हुवे रिज़्क़ पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई।

(مسلم، كتاب الزكوة، باب فى الكفاف والقناعة،ص٥٢٤،حديث:١٠٥٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी जिसे **ईमान** व **तक़्वा**, **ब क़दरे ज़रूरत माल** और **थोड़े माल पर सब्र**,

येह चार ने'मतें मिल गईं उस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का बड़ा ही करम व फ़ज़्ल हो गया, वोह कामयाब रहा और दुन्या से कामयाब गया। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 9)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ियादा ग़नी कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तेरा कौन सा बन्दा ज़ियादा ग़नी है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरे दिये पर सब से ज़ियादा क़नाअ़त करे।

(إحياء علوم الدين،كتاب ذم البخل۔الخ، بيان ذم الحرص، ٣/٢٩٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ना का तअ़ल्लुक़ दिल से है माल से नहीं

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : अमीरी ज़ियादा माल व अस्बाब से नहीं बल्कि अमीरी दिल की ग़ना से है।

(بخاری ،كتاب الرقاق ،باب الغنى غنى النفس، ٤/٢٣٣، حديث:٦٤٤٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : दिल की ग़ना से मुराद क़नाअ़त व सब्र रिज़ा बर क़ज़ा है। ह़रीस मालदार **फ़क़ीर** है क़नाअ़त वाला ग़रीब **अमीर** है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 12)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

कभी न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे क़नाअ़त का वस्फ़ मिल गया उसे अ़ज़ीम ख़ज़ाना मिल गया, चुनान्चे, रह़मते आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़नाअ़त कभी ख़त्म न होने वाला ख़ज़ाना है । (الزهد الكبير،ص٨٨،حديث:١٠٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़नाअ़त की वज्ह से रिज़्क़ में कमी नहीं होगी

हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی) फ़रमाते हैं : तेरी भाग दौड़ से मक़्सूम (या'नी मुक़द्दर) से ज़ियादा न मिलेगा और तेरी क़नाअ़त की वज्ह से कम न मिलेगा इस लिये राज़ी ब रिज़ा रह ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 13) (मिरक़ात, 9 / 25)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़नाअ़त से इ़ज़्ज़त बढ़ जाती है

क़नाअ़त से रिज़्क़ नहीं घटता बल्कि इ़ज़्ज़त बढ़ जाती है । ज़रा तारीख़ के औराक़ उठा कर देखिये तो आप को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) जैसे बे शुमार बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن मिलेंगे जिन्हों ने दुन्या में क़नाअ़त पसन्दी की ऐसी ऐसी मिसालें क़ाइम की हैं कि तारीख़ में उन्हें सुनह्री अल्फ़ाज़ में याद किया है और आज उन का नाम लेते ही निगाह व दिल उन की अ़ज़मत के सामने झुक जाते हैं, उन का ज़िक्र

दिलों को सुकून बख़्शता है और उन की सीरत पर अ़मल आज भी कामयाबी की गुज़र गाह है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर चीज़ अच्छी लगने लगती है

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जिस शख़्स की क़नाअ़त ख़ूब अच्छी हो जाए तो उस को हर शोरबा अच्छा लगने लगता है। (أداب الدنيا والدين،باب ادب الدنيا،ص١٩٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो मुक़द्दर में नहीं वोह किसी त़रह न मिलेगा

हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जो चीज़ मेरे मुक़द्दर में नहीं लिखी गई अगर मैं हवा पर सुवार हो जाऊं तो भी उसे नहीं पा सकता। (المستطرف، ١/١٢٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नसीब से ज़ियादा मिलेगा न कम

ख़ुश नसीब वोह है जो अपने नसीब पर ख़ुश है, इमाम अबुल ह़सन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि दो चीज़ों से मायूस हो जाओ आराम से रहोगे : एक येह कि तुम को दूसरों के नसीब की चीज़ मिल जाएगी, दूसरे येह कि तुम्हें तुम्हारे नसीब से ज़ियादा मिल जाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 13)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"पन्जतन पाक" की निस्बत से 5 हिकायात

हिकायत : 7 (1) क़नाअ़त कर लेता हूं

बनू उमय्या के एक हाकिम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ ख़त़ लिखा जिस में उन से किसी ज़रूरत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया ताकि वोह उसे पूरी कर दें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब में लिखा मैं ने अपनी ज़रूरतें अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश की हुई हैं जिन को वोह पूरा कर देता है, ख़ुश हो जाता हूं और जिन को वोह रोक देता है उस से **क़नाअ़त** कर लेता हूं। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 122)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 8 (2) ब क़द्रे किफ़ायत कमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब अपनी दुकान खोलते और दो ह़ब्बे (एक रत्ती या दो जव के बराबर एक वज़्न) जितना कमा लेते तो दुकान बन्द कर के चले आते।

(منهاج القاصدين،كتاب الفقروالزهد،ص١٢٢٤)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम मुनादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی अपने घर से रोज़ी कमाने के लिये निकलते, जब उन के पास अख़राजात के लिये रक़म जम्अ़ हो जाती तो मज़ीद कमाने

के लिये न रुकते बल्कि फ़ौरन घर वापस आ जाते चाहे कोई भी वक़्त होता। (اللمع،کتاب آداب المتصوفة،فی ذکر آداب من اشتغل۔الخ،ص۲٦۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 9 (3) अगर तुम क़नाअ़त करते तो मेरा लोटा गिरवी न होता

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं अपने एक दोस्त के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत के लिये गया, उन्हों ने रोटी और नमक से हमारी मेज़बानी की। मेरे दोस्त ने कहा : अगर पूदीना भी होता तो ज़ियादा अच्छा था। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर गए और अपना लोटा गिरवी रख कर पूदीना ले आए। जब हम खा चुके तो मेरे दोस्त ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ قَنَّعَنَا بِمَا رَزَقَنَا या'नी तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें अ़त़ाकर्दा रिज़्क़ पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ दी। तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर तुम मौजूद रिज़्क़ पर क़नाअ़त करते तो मेरा लोटा गिरवी न होता।

(المستدرک،کتاب الاطعمة،باب النهی عن التکلف للضیف،۵/ ۱٦۹،حدیث : ۷۲۲۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 10 (4) एक रोटी पर गुज़ारा

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ख़ुरासान के मालदार लोगों में से थे । एक दिन आप अपने मह़ल से बाहर देख रहे थे कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जिस के हाथ में रोटी का एक टुकड़ा था जिसे वोह खा रहा था, खाने के बा'द वोह सो गया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : जब येह शख़्स बेदार हो तो इसे मेरे पास लाना । चुनान्चे, उस के बेदार होने पर ग़ुलाम उसे आप के पास ले आया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : क्या रोटी खाते वक़्त तुम भूके थे ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां, पूछा : क्या उस रोटी से तुम सेर हो गए ? अ़र्ज़ की : जी हां, आप ने फिर सुवाल किया : रोटी खाने के बा'द तुम्हें अच्छी त़रह़ नींद आई ? अ़र्ज़ की : जी हां, उस की येह बातें सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सोचा : जब एक रोटी से भी गुज़ारा हो सकता है तो फिर मैं इतनी दुन्या ले कर क्या करूंगा ? (احیاء علوم الدین،کتاب الفقر والزھد،بیان فضیلۃ خصوص۔الخ،٤/ ٢٤٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 11 (5) अभी क्या कर रहा हूं !

एक मछेरा समुन्दर किनारे ख़ूब सूरत जज़ीरे में रिहाइश पज़ीर था, वोह रोज़ाना चन्द घंटों में इतनी मछलियां पकड़ लेता था

www.dawateislami.net

जिन को बेच कर उस के अख़राजात आसानी से पूरे हो जाते थे। वोह अपने घरवालों को भी वक़्त देता और किसी बड़ी परेशानी का शिकार नहीं था। एक बैनल अक़्वामी कम्पनी का नुमाइन्दा छुट्टियां गुज़ारने उस जज़ीरे में पहुंचा तो उस की मुलाक़ात मछेरे से भी हुई। नुमाइन्दे ने जब उस की सलाहिय्यतों को देखा तो मश्वरा दिया कि अगर तुम चन्द घंटे ज़ियादा काम कर के ज़ियादा मछलियां पकड़ लो तो मैं एक फ़र्म से तुम्हारा मुआ़हदा करवा देता हूं, तुम मछलियां उन को भिजवा दिया करना, मछेरे ने पूछा फिर क्या होगा ? नुमाइन्दे ने कहा : जब तुम्हारे पास कुछ रक़म जम्अ़ हो जाएगी तो एक छोटी सी लॉंच ख़रीद लेना और गहरे समुन्दर में मछलियां पकड़ कर उसी लॉंच पर फ़र्म को पहुंचा दिया करना तुम्हें अच्छा ख़ासा मुआ़वज़ा मिल जाया करेगा, मछेरे ने पूछा : इस के बा'द क्या होगा ? नुमाइन्दे ने कहा : मज़ीद कुछ अ़र्से में तुम्हारे पास ख़ासी रक़म जम्अ़ हो जाएगी तो तुम एक बह़री जहाज़ ख़रीद लेना और अपनी फ़िशिंग फ़र्म (या'नी मछलियों की कम्पनी) खोल लेना, मछेरे ने अपना सुवाल दोहराया : फिर ? नुमाइन्दे ने जवाब दिया : तुम तरक़्क़ी करते करते फ़िशिंग (मछली पकड़ने) के शो'बे में सब से बड़ी फ़र्म के मालिक बन जाओगे। मछेरे की ज़बान से निकला : इस के बा'द ? नुमाइन्दे ने कहा : जब तुम काम कर कर के थक चुके होगे तो रीटायर्मेन्ट लेना और अपने मज़दूरों को फ़र्म का मालिक बना कर दूर दराज़ ख़ूब सूरत जज़ीरे पर रिहाइश कर लेना और थोड़ी बहुत मछलियां पकड़ कर ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के लिये रक़म कमा लिया करना और अपनी फ़ेमेली के साथ हंसी ख़ुशी वक़्त गुज़ारना। अब की बार मछेरे ने सुवाल करने के बजाए नुमाइन्दे की आंखों में आंखें

www.dawateislami.net

डाल कर कहा : **मैं अपने नसीब पर ख़ुश हूं और इस वक़्त मैं वोही काम तो कर रहा हूं जो आप मुझे इतने लम्बे चोड़े सफ़र के बा'द करने का मश्वरा दे रहे हैं !**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह हिकायत फ़र्ज़ी ही सही लेकिन रातों रात अमीर बनने के ख़्वाब दिखाने वालों की इस दुन्या में कमी नहीं, बल्कि लोग तो अमीर बनने के लिये रिश्वत के लैन दैन, सूद, क़र्ज़ दबाने जैसे गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं और उन्हें इस के संगीन उख़रवी नताइज का ज़र्रा बराबर ख़याल नहीं होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों को तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए,

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाओ

आ'राबी का चौथा सुवाल येह था कि मैं लोगों में सब से बेहतर बनना चाहता हूं । सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोगों में सब से बेहतर वोह है जो दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाता हो, तुम लोगों के लिये नफ़्अ़ बख़्श बन जाओ ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान को फ़ाएदा पहुंचाना कारे सवाब है मसलन उस को रास्ता बता देना, सामान उठाने में उस की मदद कर देना या उस की कोई ज़रूरत पूरी कर देना, अल ग़रज़ किसी भी त़रह़ से उस के काम आने की बड़ी फ़ज़ीलत है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसलमान मुसलमान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही उसे रुस्वा

करता है और जो कोई अपने भाई की ह़ाजत पूरी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता है और जो किसी मुसलमान की एक परेशानी दूर करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा।

(مسلم،کتاب البر والصلة،باب تحریم الظلم،ص١٣٩٤،الحدیث:٢٥٨٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुछ ख़र्च किये बिग़ैर सदक़े का सवाब कमाइये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : तेरा अपने भाई के सामने मुस्कुरा देना सदक़ा है और भलाई का हुक्म देना सदक़ा है और बुराई से रोक देना सदक़ा है और किसी भटके हुवे को रास्ता बताना भी तेरे लिये सदक़ा है और तेरा किसी कमज़ोर निगाह वाले शख़्स की मदद कर देना तेरे लिये सदक़ा है और तेरा रास्ते से पथ्थर, कांटा, हड्डी हटा देना तेरे लिये सदक़ा है और तेरा अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना तेरे लिये सदक़ा है।

(ترمذی،کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی صنائع المعروف، ٣/٣٨٤،حدیث:١٩٦٣)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ("किसी भटके हुवे को रास्ता बताना तेरे लिये सदक़ा है" के तह़्त) लिखते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰہ! क्या रब तआ़ला की मेहरबानियां हैं जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल इस उम्मत को मिलीं, वोह मा'मूली काम जिन में न ख़र्च हो न तक्लीफ़ सवाब का बाइस बन गए, किसी को रास्ता बता देना या मस्अला समझा देना

भी सवाब का बाइ़स हो गया। ("तेरा किसी कमज़ोर निगाह वाले शख़्स की मदद कर देना तेरे लिये सदक़ा है।" के तह़त मुफ़्ती साहि़ब लिखते हैं :) या इस त़रह़ कि उस की उंगली पकड़ कर जहां जाना चाहता है वहां पहुंचा दे या इस त़रह़ कि उस का काम काज कर दे, सब में सवाब है कि अन्धों और कमज़ोर नज़र वालों की ख़िदमत ने'मते आंख का शुक्रिया है, हर ने'मत का शुक्र जुदागाना है और शुक्र पर ज़ियादतिये ने'मत का वा'दा है : لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा (پ۱۳،ابراهيم:۷)) ("रास्ते से पथ्थर, कांटा, हड्डी हटा देना तेरे लिये सदक़ा है" के तह़त मुफ़्ती साहि़ब लिखते हैं) : इस से लोग तक्लीफ़ से बचेंगे और तुम्हें सवाब मिलेगा। मा'लूम हुवा कि जैसे मुसलमान को नफ़्अ़ पहुंचाना सवाब है ऐसे ही उन्हें तक्लीफ़ से बचाना भी सवाब है, किसी भले आदमी को बद मुआ़श के शर से बचा लेना सवाब है, अगर कोई शरीफ़ुन्नफ़्स आदमी बे ख़बरी में ख़बीसुन्नफ़्स से रिश्ता करना चाहता हो उस से बचा लेना भी सवाब है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 104)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए। लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसलमान की इ़ज़्ज़तो आबरू और उस के जानो माल मुसलमान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

"रज़ा" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से 3 हिकायात

हिकायत : 12 (1) हर गुठली के इवज़ एक दिरहम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उ़म्दा खजूरें अपने भाइयों को खाने के लिये पेश करते और फ़रमाते : जो ज़ियादा खाएगा मैं उसे हर गुठली के बदले एक दिरहम दूंगा, फिर गुठलियां गिनते और जिस ने ज़ियादा खाई होतीं उसे हर गुठली के बदले एक दिरहम देते ।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الاکل،الباب الثانی،۲/۱۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 13 (2) पड़ोस के चालीस घरों पर ख़र्च किया करते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने पड़ोस के घरों में से दाएं बाएं और आगे पीछे चालीस चालीस घरों के लोगों पर ख़र्च किया करते थे, ईद के मौक़अ़ पर उन्हें कुरबानी का गोश्त और कपड़े भेजते और हर ईद पर 100 ग़ुलाम आज़ाद किया करते थे । (المستطرف،۱/۲۷۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 14 (3) 30 हज़ार नफ़्अ़ वापस लौटा दिया

एक ताबेई बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बसरा में रहते थे जब कि उन का एक ग़ुलाम "सूस" में रहा करता था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शकर ख़रीद कर उस की त़रफ़ भेजा करते थे। एक मरतबा उस ग़ुलाम ने आप की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि इस साल गन्ने की फ़स्ल को नुक़्सान पहुंचा है चुनान्चे, उन्हों ने बहुत सी शकर ख़रीद ली। फिर वक़्त आने पर उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को 30 हज़ार का नफ़्अ़ हुवा। जब वोह अपने घर वापस हुवे तो सारी रात सोचते रहे और फ़रमाया : मैं ने 30 हज़ार का नफ़्अ़ तो ह़ासिल कर लिया है लेकिन एक मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही को तर्क कर दिया। चुनान्चे, जब सुब्ह़ हुई तो शकर बेचने वाले के पास गए और उसे नफ़्अ़ के 30 हज़ार वापस देते हुवे कहा : بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِيْهَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस में बरकत अ़त़ा फ़रमाए। उस ने कहा : येह मेरे कहां से हो गए ? फ़रमाया : मैं ने तुम से ह़क़ीक़ते ह़ाल छुपाई थी। उस ने अ़र्ज़ की : رَحِمَكَ اللّٰهُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! मगर अब तो आप ने मुझे बता दिया है, लिहाज़ा मैं ने येह अपनी ख़ुशी से आप को दिये। चुनान्चे, वोह बुज़ुर्ग नफ़्अ़ ले कर दोबारा घर लौट आए और फिर पूरी रात सोचते हुवे गुज़ार दी और दिल में सोचा : मैं ने मुसलमान भाई के साथ ख़ैर ख़्वाही नहीं की, हो सकता है कि उस ने मुझ से ह़या

करते हुवे येह नफ़्अ़ मुझे दे दिया हो। लिहाज़ा अगले दिन सुब्ह़ सवेरे फिर शकर बेचने वाले के पास गए और फ़रमाया : عَافَكَ اللّٰہُ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमाए ! तुम अपना माल ले लो इसी में मेरी दिली ख़ुशी है, चुनान्चे, उस ने 30 हज़ार ले लिये। (احیاء علوم الدین،کتاب آداب الکسب، الباب الثالث،۲/۱۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ दूसरों के लिये भी वोही पसन्द करो

आ'राबी का पांचवां सुवाल येह था कि मैं चाहता हूं कि सब से ज़ियादा अ़द्ल करने वाला बन जाऊं। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने लिये पसन्द करते हो वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करो, सब से ज़ियादा आ़दिल बन जाओगे।

कामिल मोमिन की एक निशानी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **है :** बन्दा उस वक़्त तक मोमिन (या'नी कामिल मोमिन[1]) नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने भाई के लिये वोह चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (شعب الایمان،باب فی الزکاۃ،فصل فیما جاء فی الایثار،۳/۲۶۱، حدیث:۳۴۸۵)

[1] فیض القدیر،۶/ ۵۷۲،تحت الحدیث:۹۹۴۰

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى लिखते हैं : या'नी जो ख़ैरो भलाई अपने लिये पसन्द करे वोह अपने मुसलमान भाई के लिये भी पसन्द करे । "ख़ैर" एक जामेअ़ कलिमा है जो नेकियों और दीनी व दुन्यावी जाइज़ बातों को आ़म है जब कि ममनूआ़ बातें इस में दाख़िल नहीं हैं। इस फ़रमाने आ़लीशान का मक़्सद येह है कि मुसलमान एक जिस्म की मानिन्द हो जाएं । (فیض القدیر،٦/ ٥٧٢،تحت الحدیث:٩٩٤٠ملتقطاً) एक और मक़ाम पर हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى नक़्ल फ़रमाते हैं : अपने साथ जो सुलूक किया जाना पसन्द है वोही दूसरों के साथ करो । (فیض القدیر، ١/ ٨٧، تحت الحدیث:٢٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस का ज़िक्र उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ अपनी ग़ैर मौजूदगी में तुम अपना ज़िक्र होना पसन्द करते हो । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين،ص١٩٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की छटी शरीफ़" की निस्बत से 6 हिकायात

हिकायत : 15 ﴿1﴾ बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र

एक बुज़ुर्ग ने किसी बद अख़्लाक़ औ़रत से निकाह़ किया । वोह बुज़ुर्ग उस की बद अख़्लाक़ियों पर सब्र करते रहते थे ।

उन से अ़र्ज़ की गई : आप इसे त़लाक़ क्यूं नहीं दे देते ? इरशाद फ़रमाया : मुझे डर है कि इस से कोई ऐसा शख़्स निकाह़ न कर ले जो इस को बरदाश्त न कर सके और यूं इस के सबब उस शख़्स को नुक़्सान व तक्लीफ़ पहुंचे ।

(احیاء علوم الدین،کتاب کسر الشھوتین،القول فی شھوۃ الفرج،۳/۱۲۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 16 ﴿2﴾ दीनारों भरी थेली

एक शख़्स मरने लगा तो उस ने अपने एक दोस्त को बुलाया और एक थेली उस के ह़वाले की, जिस में हज़ार दीनार थे, कि मेरा लड़का जब बड़ा हो जाए तो इस थेली से जो तू पसन्द करे, उसे दे देना, येह कह कर वोह मर गया और जब उस का लड़का बड़ा हुवा तो उस शख़्स ने उसे ख़ाली थेली दे दी और हज़ार दीनार ख़ुद रख लिये, लड़का ह़ज़रते इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास पहुंचा और सारा वाक़िआ़ सुनाया, आप ने उस शख़्स को बुलाया और फ़रमाया कि हज़ार दीनार इस के ह़वाले कर दो, इस लिये कि इस के वालिद ने मरते दम तुझ से येह कहा था कि इस थेली से "जो तू पसन्द करे" इसे दे देना, और इस थेली से तुम ने दीनारों ही को पसन्द किया है, इसी लिये तुम ने उन्हें रख लिया है, लिहाज़ा दीनार जो तुम ने पसन्द किये हैं, ह़स्बे वसिय्यत इसे दे दो । नाचार उसे वोह दीनार देने पड़े । (الخیرات الحسان،ص۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 17 ﴾3﴿ पसन्द की चीज़ खिला दी

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर एक साइल आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घरवालों से फ़रमाया : इसे शकर खिलाओ ! वोह बोले : हम इसे रोटी खिला देते हैं जो इस के लिये ज़ियादा मुफ़ीद है। इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा नास हो ! इसे शकर ही खिलाओ क्यूंकि रबीअ़ को शकर पसन्द है।

(منہاج القاصدین،کتاب اسرار الزکاۃ،ص ۱۷۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 18 ﴾4﴿ एह़साने अ़ज़ीम की अ़ज़ीम मिसाल

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास मुख़्तलिफ़ अक़्साम और मुख़्तलिफ़ क़ीमतों के हुल्ले (चादरें / जुब्बे) थे। उन में से एक क़िस्म ऐसी थी कि हर हुल्ले की क़ीमत 400 दिरहम थी और एक क़िस्म ऐसी थी कि हर हुल्ला 200 दिरहम का था। नमाज़ का वक़्त हुवा तो आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भतीजे को दुकान पर छोड़ कर ख़ुद नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले गए। इसी अस्ना में एक आ'राबी (या'नी देहाती) आया और उस ने 400 दिरहम का हुल्ला त़लब किया, भतीजे ने उस के सामने 200 दिरहम वाला हुल्ला पेश किया, उसे वोह अच्छा लगा और उस ने 400 दिरहम पर राज़ी हो कर उसे ख़रीद लिया। आ'राबी हुल्ला हाथ में लिये वापस जा रहा था कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से उस का सामना हो गया। उन्हों ने अपने हुल्ले

को पहचान कर उस से पूछा : येह हुल्ला कितने में ख़रीदा है ? उस ने जवाब दिया : 400 दिरहम में । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : येह 200 दिरहम से ज़ियादा का नहीं है, तुम जा कर इसे वापस कर दो । उस ने कहा : हमारे शहर में येह हुल्ला 500 दिरहम का है नीज़ मुझे येह पसन्द भी है । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : वापस पलट जाओ कि दीन में ख़ैर ख़्वाही दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है उस) से बेहतर है । चुनान्चे, आप उसे वापस दुकान पर लाए और 200 दिरहम वापस कर दिये । फिर अपने भतीजे को डांटते हुवे फ़रमाया : तुम्हें शर्म नहीं आई ? क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरते कि शै की क़ीमत के बराबर नफ़्अ़ लेते हो और मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही को तर्क करते हो ? भतीजे ने जवाब दिया : मैं ने उस के राज़ी होने पर ही इतना ज़ियादा नफ़्अ़ लिया था । आप ने फ़रमाया : क्या तुम ने उस के ह़क़ में वोह चीज़ पसन्द की जो अपने लिये पसन्द करते हो ?

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الکسب والمعاش،الباب الرابع،۲/۱۰۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 19 ﴿5﴾ बिल्ली नहीं रखी

एक बुज़ुर्ग के घर में बहुत चूहे हो गए । किसी ने कहा : हुज़ूर ! अगर घर में एक बिल्ली रख लें ? (तो येह सारे भाग जाएं और बहुत जल्द आप को नजात मिल जाए) बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया : भाई ! मुझे डर है कि मेरी बिल्ली की आवाज़ से येह चूहे यहां से भाग कर हमसायों के घरों में चले जाएंगे, तो इस

त़रह़ मैं उन के लिये वोह चीज़ पसन्द करने वाला बन जाऊंगा जो अपने लिये पसन्द नहीं करता ।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الالفة۔الخ،الباب الثالث،۲/۲٦۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 19 ﴿6﴾ खोटा सिक्का

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह ख़य्यात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक आतश परस्त कपड़े सिलवाता और हर बार उजरत में **खोटा सिक्का** दे जाता, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चुप चाप ले लेते । एक बार आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ग़ैर मौजूदगी में शागिर्द ने आतश परस्त से **खोटा सिक्का** न लिया । जब वापस तशरीफ़ लाए और मा'लूम हुवा तो शागिर्द से फ़रमाया : तू ने खोटा दिरहम क्यूं नहीं लिया ? कई साल से वोह मुझे **खोटा सिक्का** ही देता रहा है और मैं भी जान बूझ कर ले लेता हूं ताकि येह वोही सिक्का किसी दूसरे मुसलमान को न दे आए ।

(احیاء علوم الدین،کتاب ریاضة النفس،بیان علامات حسن الخلق،۳/۸۷ملخصًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें ग़ौर करना चाहिये कि हम एक मुसलमान की ह़ैसिय्यत से येह पसन्द करते हैं कि हम से

सच बोला जाए, हमारा एह़तिराम किया जाए, हमारे हुक़ूक़ पूरे किये जाएं तो हमें अपने मुसलमान भाई के लिये भी इन्ही चीज़ों को पसन्द करना चाहिये और हम अपने लिये येह ना पसन्द करते हैं कि हमें धोका दिया जाए, हमारी ग़ीबत की जाए, हमें तोहमत लगाई जाए, हमारा माल चुराया जाए, हम से रिश्वत त़लब की जाए, हम पर ज़ुल्म किया जाए, हमें धोका दिया जाए, हम से भत्ता त़लब किया जाए, मिलावट वाला माल ख़ालिस कह कर बेचा जाए, हमारी बे इ़ज़्ज़ती की जाए तो हमें चाहिये कि अपने मुसलमान भाई के लिये भी येही चीज़ ना पसन्द करें और ह़दीसे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत या'नी ईमान के कमाल को ह़ासिल करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) ज़िक्रुल्लाह की कसरत करो

आ'राबी का छटा सुवाल येह था कि मैं बारगाहे इलाही में ख़ास मक़ाम ह़ासिल करना चाहता हूं। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ज़िक्रुल्लाह** की कसरत करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे बन जाओगे।

ज़िन्दा और मुर्दा की मिसाल

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले और न करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की त़रह़ है। (بخاری، کتاب الدعوات، ٤/٢٢٠، حدیث:٦٤٠٧)

ज़िक्र की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अक्सर येही ख़याल किया जाता है कि ज़बान से سُبْحٰنَ اللّٰه، اَلْحَمْدُ لِلّٰه वग़ैरा अदा करने का नाम ही ज़िक्र है, इस में कोई शक नहीं कि येह भी ज़िक्र है मगर कलामे अ़रब में ज़िक्र का लफ़्ज़ कसीर मआ़नी में इस्ति'माल होता है। चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى सूरए बक़रह की आयत नम्बर 152 فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।) के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1) लिसानी (या'नी ज़बान से) (2) क़ल्बी (या'नी दिल से) (3) बिल जवारेह़ (आ'ज़ाए जिस्म से)। **ज़िक्रे लिसानी** तस्बीह़, तक़्दीस, सना वग़ैरा बयान करना है ख़ुत़्बा तौबा इस्तिग़फ़ार दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं। **ज़िक्रे क़ल्बी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का याद करना उस की अ़ज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़लमा का इस्तिम्बात़े मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल हैं। **ज़िक्र बिल जवारेह़** येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत) में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना येह ज़िक्र बिल जवारेह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है। तस्बीह़ व तक्बीर, सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़,

इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी, और क़ियाम, रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह् है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, ज़ेरे आयत : 152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जुनून की दवा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى कसरत से ज़िक्रुल्लाह किया करते थे। एक शख़्स ने आप की येह ह़ालत देख कर आप के मुसाह़िबीन से कहा : येह तो मजनून हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की येह बात सुन ली और इरशाद फ़रमाया : येह (या'नी ज़िक्रुल्लाह) जुनून नहीं बल्कि जुनून की दवा है।

(فیض القدیر،۱/۵۸٤،تحت الحدیث:۹۰۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत में भी अफ़्सोस !

ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "अहले जन्नत को किसी चीज़ का भी अफ़्सोस नहीं होगा सिवाए उस साअ़त (घड़ी) के जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के बिग़ैर गुज़र गई। (المعجم الکبیر، ۲۰/۹۳،حدیث:۱۸۲)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मुर्ग़ क्या कहता है ?

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़रमान है : मुर्ग़ कहता है : اُذْکُرُوا اللّٰہَ یَا غَافِلِیْن या'नी ऐ ग़ाफ़िलो ! **अल्लाह** का ज़िक्र करो । (فیض القدیر،١/٤٨٨،تحت الحدیث:٦٩٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जहां ज़िक्र होता है हर चीज़ गवाह हो जाती है

हज़रते सय्यिदुना अबुल मलीह علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ السَّمِیع जब **ज़िक्रुल्लाह** करते तो झूम उठते और फ़रमाते कि मेरी येह कैफ़िय्यत इस लिये होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे याद करता है, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَاذْکُرُوْنِیْٓ اَذْکُرْکُمْ (پ٢،البقرۃ:١٥٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा ।*

अगर वोह किसी जगह जाते हुवे रास्ते में **ज़िक्रुल्लाह** करना भूल जाते तो वापस आ जाते और दोबारा उसी रास्ते में **ज़िक्रुल्लाह** करते हुवे गुज़रते । अगर्चे एक मन्ज़िल का फ़ासिला होता और फ़रमाते : मैं चाहता हूं कि मैं जिस जिस बुक़्अ़ए ज़मीन (अ़लाक़े) से गुज़रूं वोह सब क़ियामत में मेरे **ज़िक्रुल्लाह** की गवाही दें । (تنبیہ المغترین،ص١٠٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे बुज़ुर्गों की कैफ़िय्यात कैसी होती थीं कि अगर किसी गली से गुज़रते हुवे ज़िक्र छूट जाता तो दोबारा लौट जाते और फिर ज़िक्र करते हुवे वहीं से गुज़रते कि कोई गली, कोई कूचा ऐसा न हो जो **ज़िक्रुल्लाह** से ख़ाली रह जाए मगर हम अपने रास्ते में आने वाली चीज़ों को किस बात पर गवाह बनाते हैं ? इस पर हर एक को ग़ौर कर लेना चाहिये बिल ख़ुसूस कार, वेन, बस, ट्रेन और जहाज़ वग़ैरा में फ़िल्में डिरामे और गाने देखने सुनने वालों को संभल जाना चाहिये कि इसी ह़ालत में मौत आ गई तो **हमारा क्या बनेगा** ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 21 पहाड़ों को कलिमा पढ़ कर गवाह क्यूं नहीं कर लेते ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के जबलपुर के सफ़र का वाक़िआ़ है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने ख़ुद्दाम व मुसाह़िबीन के हमराह जबलपुर के दर्रह में कश्ती पर सफ़र किया, इस सफ़र के रावी लिखते हैं : येह दर्रह पानी ने संगे मर मर के पहाड़ काट कर पैदा किया है ऊंची ऊंची चोटी की पहाड़ियों का सिलसिला दूर तक चला गया है, येह रास्ता पानी ने पहाड़ों को काट कर ह़ासिल किया है, दूर तक दूरवय्या (या'नी

दोनों त़रफ़) संगे मर मर के पहाड़ सर ब फ़लक (या'नी बहुत बुलन्द) दीवारों की त़रह़ चले गए हैं, कई मील के सफ़र में सिर्फ़ एक जगह किनारा देखा जो ग़ालिबन (8) गज़ चौड़ा था। इस हैबतनाक मन्ज़र का नाम बरादरे मुकर्रम मौलाना मौलवी ह़सनैन रज़ा ख़ान साहि़ब (या'नी सरकारे आ'ला ह़ज़रत के भतीजे) ने فِی البَدِیهه (या'नी बे साख़्ता) "दहाने मर्ग "(या'नी मौत का दहाना) रखा, कश्ती निहायत तेज़ जा रही थी, लोग आपस में मुख़्तलिफ़ बातें कर रहे थे, इस पर इरशाद फ़रमाया : "इन पहाड़ों को कलिमए शहादत पढ़ कर गवाह क्यूं नहीं कर लेते !"

ह़िकायत : 22 मिट्टी के ढेलों को अपने ईमान का गवाह बनाने का इन्आ़म

(फिर फ़रमाया) एक साहि़ब का मा'मूल था जब मस्जिद तशरीफ़ लाते तो सात ढेलों को जो बाहर मस्जिद के त़ाक़ में रखे थे अपने कलिमए शहादत का गवाह कर लिया करते, इसी त़रह़ जब वापस होते तो गवाह बना लेते। बा'दे इन्तिक़ाल मलाइका उन को जहन्नम की त़रफ़ ले चले, उन सातों ढेलों ने सात पहाड़ बन कर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये और कहा : "हम इस के कलिमए शहादत के गवाह हैं।" उन्हों ने नजात पाई तो जब ढेले पहाड़ बन कर ह़ाइल हो गए तो येह तो पहाड़ हैं।

येह सुन कर सब लोग ब आवाज़े बुलन्द कलिमए शहादत पढ़ने लगे, मुसलमानों की ज़बान से कलिमा शरीफ़ की सदा बुलन्द हो कर पहाड़ों में गूंज गई। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 313 बितसर्रुफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 23 अपने ईमान पर गवाह बनाया है

शहज़ादए अ़त्तार मौलाना अलहाज अबू उसैद, उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1418 हिजरी में मुत्तहिदा अ़रब अमारात के क़ियाम के दौरान शारजा में एक बार मैं ने राह चलते हुवे देखा कि शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक दरख़्त के नीचे खड़े हो गए और बा आवाज़े बुलन्द कलिमए त़य्यिबा पढ़ा, इस पर मैं ने इस्तिफ़्सार किया : आप ने अभी दरख़्त के नीचे कलिमए पाक पढ़ा, इस में क्या ह़िक्मत थी ? फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस दरख़्त को बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा सुना कर अपने ईमान पर गवाह बनाया है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 24 वस्वसे का इलाज

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز से मरवी है कि एक शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुवाल किया कि वोह उसे इन्सान के दिल में शैत़ान की जगह दिखाए तो उस शख़्स ने ख़्वाब में एक शख़्स का जिस्म देखा जो शीशे की मिस्ल था और उस के आर पार देखा जा सकता था । फिर उस ने एक मेंडक की शक्ल में उस (जिस्म) के बाएं कन्धे और कान की दरमियानी जगह पर शैत़ान को बैठे हुवे पाया जिस ने अपनी लम्बी थूथनी (मुंह और नाक) बाएं कन्धे की जानिब से उस

शख़्स के दिल तक दाख़िल कर रखी थी और वस्वसे डाल रहा था और जब वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता तो वोह पीछे हट जाता। (الحديقة الندية، ١/٤٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जानवरों में भी ज़िक्रुल्लाह करने वाले होते हैं

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : इन जानवरों पर अच्छी त़रह़ सुवारी करो और इन से उतर जाओ, रास्तों और बाज़ारों में गुफ़्तगू करने के लिये इन्हें कुरसी न बना लो क्यूंकि कई सुवारी के जानवर अपने सुवार से बेहतर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा ज़िक्र करने वाले होते हैं।

(جامع الاحاديث، ١/٤٠٤، حديث:٢٧٦٥)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : जानवर भी ज़िक्रुल्लाह करते हैं जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ (پ١٥، بنی اسرائیل:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले।*

(فيض القدير، ١/٦١١، تحت الحديث:٩٥٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ नेक बनने का नुस्ख़ा

आ'राबी का सातवां सुवाल येह था कि अच्छा और नेक बनना चाहता हूं। **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के

लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत यूं करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तो तुम्हें देख ही रहा है।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं कि : अगर तू ख़ुदा को देखता है तो तेरे दिल में किस दरजा उस का ख़ौफ़ होता और किस त़रह़ तू संभल कर अ़मल करता, ऐसे ही ख़ौफ़ के साथ दिल लगा कर दुरुस्त अ़मल कर। यूं तो हर वक़्त ही समझो कि रब तुम्हें देख रहा है मगर इ़बादत की ह़ालत में तो ख़ास त़ौर पर ख़याल रखो, तो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इ़बादत आसान होगी, दिल में हुज़ूर व आ़जिज़ी पैदा होगी, आंखों में आंसू आएंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को नसीब करे। आमीन !

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 26)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 25 सजदा हो तो ऐसा !

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब नमाज़ पढ़ते तो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की बिना पर एक लकड़ी मा'लूम होते, और जब सजदा करते तो चिड़यां आप को गिरी हुई दीवार समझ कर पीठ पर सुवार हो जातीं। एक दिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़त़ीमे का'बा में नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे कि मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने का आला) से एक पथ्थर आया और आप के कपड़े फाड़ता हुवा निकल गया मगर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नमाज़ जारी रखी। (منهاج القاصدين،كتاب اسرار الصلاة،ص١١٧)

हिकायत : 26 नमाज़ जारी रखी

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कभी नमाज़ में इधर उधर मुतवज्जेह नहीं देखा । एक मरतबा मस्जिद का एक हिस्सा ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया तो बाज़ार वाले चीख़ो पुकार करने लगे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस वक़्त उसी मस्जिद में थे लेकिन आप ने नमाज़ जारी रखी ।

(منهاج القاصدين،كتاب اسرار الصلاة،ص١١٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन दोनों पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो

आ'राबी का आठवां सुवाल येह था कि मैं कामिल ईमान वाला बनना चाहता हूं : सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो, कामिल ईमान वाले बन जाओगे ।

कामिल ईमान वाला

सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमानों में बड़े कामिल ईमान वाला वोह है जो सब से अच्छे अख़्लाक़ वाला और अपने बाल बच्चों पर मेहरबान हो ।

(ترمذی،كتاب الايمان ،باب ما جاء فی استكمال الايمان،٤/ ٢٧٨،حديث:٢٦٢١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : मोमिन का तअ़ल्लुक़ ख़ालिक़ से भी है मख़्लूक़ से भी, ख़ालिक़ से इ़बादात का तअ़ल्लुक़ है मख़्लूक़ से मुआ़मलात का, इ़बादात दुरुस्त करना आसान है मगर मुआ़मलात का संभालना बहुत मुश्किल है इसी लिये यहां ख़लीक़ शख़्स को कामिल ईमान वाला क़रार दिया, फिर अजनबी लोगों से कभी कभी वासित़ा पड़ता है मगर घरवालों से हर वक़्त तअ़ल्लुक़ रहता है, इन से अच्छा बरतावा करना बड़ा कमाल है, इस्लाम मुकम्मल इन्सानिय्यत सिखाता है : (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 101) एक और मक़ाम पर मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : अच्छी आ़दत से इ़बादात और मुआ़मलात दोनों दुरुस्त होते हैं, अगर किसी के मुआ़मलात तो ठीक मगर इ़बादात दुरुस्त न हों या इस के उलट हो तो वोह अच्छे अख़्लाक़ वाला नहीं। ख़ुश ख़ुल्क़ी बहुत जामेअ़ सिफ़त है कि जिस से ख़ालिक़ और मख़्लूक़ सब राज़ी रहें वोह ख़ुश ख़ुल्क़ी है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 652)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अदब व अख़्लाक़ सीखते थे

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस में पांच हज़ार या इस से भी ज़ियादा अफ़राद ह़ाज़िर होते थे जिन में से पांच सो के लगभग ह़दीसें लिखते थे जब कि बाक़ी अफ़राद आप से आदाब और अख़्लाक़िय्यात सीखा करते थे। (سیر اعلام النبلاء،۹/۵۲۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) फ़राइज़ का एहतिमाम करो

आ'राबी का नवां सुवाल येह था कि (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का) फ़रमां बरदार बनना चाहता हूं। ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़[1] का एहतिमाम करो, उस के मुत़ीअ़ (व फ़रमां बरदार) बन जाओगे।

नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज की अहमिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस्लाम पांच चीज़ों पर क़ाइम किया गया : इस की गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात देना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े।

(مسلم،کتاب الایمان، باب بیان ارکان الاسلام، ص۲۷، حدیث:۲۱)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : या'नी इस्लाम मिस्ले ख़ैमा या छत के है और येह पांच अरकान इस के पांच सुतूनों की त़रह़ कि जो कोई इन में से एक का इन्कार करेगा वोह इस्लाम से ख़ारिज होगा और उस का इस्लाम मुन्हदिम हो

1.....फ़राइज़ुल्लाह से मुराद नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज है। (अन्नज़र : बिहिश्त की कुन्जियां, स. 168) लिसानुल अ़रब में लफ़्ज़े फ़र्ज़ के तह़त है : وفَرائضُ اللّٰهِ حُدودُهُ التی أَمرَ بها ونهَی عنها फ़राइज़ुल्लाह से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वोह हुदूद हैं जिन का उस ने हुक्म दिया और मन्अ़ फ़रमाया है। (लिसानुल अ़रब, स. 2 / 3010)

जाएगा । ख़याल रहे कि इन आ'माल पर कमाले ईमान मौक़ूफ़ है और इन के मानने पर नफ़्से ईमान मौक़ूफ़, लिहाज़ा जो सहीहुल अ़क़ीदा मुसलमान कभी कलिमा न पढ़े या नमाज़ रोज़े का पाबन्द न हो, वोह अगर्चे मोमिन तो है मगर कामिल नहीं, और जो इन में से किसी का इन्कार करे वोह काफ़िर है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 27)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक़ामे फ़िक्र

आज दुन्या में मुसलमानों की अक्सरिय्यत शरई अह़काम पर अ़मल के मुआ़मले में बेह़द ग़फ़्लत व सुस्ती का शिकार है । इ़बादात को ही ले लीजिये कि नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा की अदाएगी में जिस त़रह़ कोताही की जाती है उस का अन्दाज़ा बा रौनक़ मक़ाम पर किसी भी मस्जिद में नमाज़ियों की ता'दाद को देख कर लगाया जा सकता है या फिर दौराने रमज़ान "दिन दहाड़े" होटलों वग़ैरा में बिला उ़ज़्रे शरई रोज़ा न रखने वाले "रोज़ा ख़ोरों" की ता'दाद को देख कर, बे शुमार मालदार ऐसे हैं जिन पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुका होता है लेकिन वोह उस फ़र्ज़ की अदाएगी में कोताही करते हैं, सालहा साल से ज़कात वाजिब हो रही होती है लेकिन देने से कतराते हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शरई अह़कामात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾10﴿ गुनाहों से पाक होने का त़रीक़ा

आ'राबी का दसवां सुवाल येह था कि (रोज़े क़ियामत) गुनाहों से पाक हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना चाहता हूं ! हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़ुस्ले जनाबत ख़ूब अच्छी त़रह़ किया करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलोगे कि तुम पर कोई गुनाह न होगा ।

जन्नत में दाख़िल होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पांच चीज़ें ऐसी हैं जो इन्हें ईमान की ह़ालत में अदा करेगा जन्नत में दाख़िल होगा : (1) पांच नमाज़ों के वुज़ू, रुकूअ़, सुजूद और औक़ात का लिह़ाज़ रखे (2) रमज़ान के रोज़े रखे (3) अगर इस्तित़ाअ़त रखता हो तो **बैतुल्लाह** का ह़ज करे (4) ख़ुशदिली के साथ ज़कात दे (5) और अमानत अदा करे । अ़र्ज़ किया गया : या नबिय्यल्लाह ! अमानत की अदाएगी से क्या मुराद है ? इरशाद फ़रमाया : ग़ुस्ले जनाबत करना, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इब्ने आदम को अपने दीन में से ग़ुस्ल के इलावा किसी चीज़ का अमीन नहीं बनाया ।

(مجمع الزوائد،کتاب الایمان ،باب فیمابنی علیه الاسلام،۱/۲۰٤،حدیث:۱۳۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छी त़रह़ गुस्ल करने का त़रीक़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, नेकी की दा'वत (हि़स्सा अव्वल) सफ़ह़ा 137 पर है : निय्यत के बिग़ैर भी गुस्ल हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा, इस लिये बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये गुस्ल करता हूं। पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, हां अगर चौकी वग़ैरा पर गुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर गुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये। नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फेर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाना चाहिये जहां किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुमकिन न हो तो मर्द अपना सत्र (नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूंकि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी, औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है। दौराने गुस्ल किसी क़िस्म

www.dawateislami.net

की गुफ़्तगू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना मुस्तह़ब है।

(بہارِ شریعت, 1 / 319 وغیرہ ماخوذا عالمگیری ج ۱ ص ۱٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ किसी पर ज़ुल्म मत करो

आ'राबी का ग्यारहवां सुवाल येह था कि मैं चाहता हूं कि रोज़े क़ियामत मेरा ह़श्र नूर में हो। **सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी पर ज़ुल्म मत करो, तुम्हारा ह़श्र नूर में होगा।

ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरा होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़ुल्म से बचो क्यूंकि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरियां होगा और कन्जूसी से बचो क्यूंकि कन्जूसी ने तुम से पहले वालों को हलाक कर दिया कन्जूसी ने उन्हें रग़बत दी कि उन्हों ने ख़ून रेज़ी की और ह़राम को ह़लाल जाना।

(مسلم،کتاب البر والصلة،باب تحریم الظلم،ص۱۳۹٤،حدیث:۲۵۷۸)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : ज़ुल्म के लुग़वी मा'ना हैं किसी चीज़ को बे मौक़अ़ इस्ति'माल करना और

www.dawateislami.net

किसी का ह़क़ मारना । इस की बहुत क़िस्में हैं : ۞ गुनाह करना अपनी जान पर ज़ुल्म है ۞ क़राबत दारों या क़र्ज़ ख़्वाहों का ह़क़ न देना उन पर ज़ुल्म ۞ किसी को सताना ईज़ा देना उस पर ज़ुल्म, येह ह़दीस सब को शामिल है और ह़दीस अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है या'नी ज़ालिम पुल सिरात़ पर अंधेरियों में घिरा होगा, येह ज़ुल्म अंधेरी बन कर उस के सामने होगा, जैसे कि मोमिन का ईमान और उस के नेक आ'माल रोशनी बन कर उस के आगे चलेंगे, रब तआ़ला फ़रमाता है : يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ (وَبِاَيْمَانِهِمْ) **(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इन का नूर इन के आगे और इन के दह्ने दौड़ता है ।

((پ۲۷،الحدید:۱۲))

चूंकि ज़ालिम दुन्या में ह़क़ नाह़क़ में फ़र्क़ न कर सका इस लिये अंधेरे में रहा । (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 72)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मज़लूम की बद दुआ़ मक़्बूल है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मज़लूम की बद दुआ़ से बचो अगर्चे वोह काफ़िर ही हो क्यूंकि उस के सामने कोई ह़िजाब नहीं होता ।

(مسند احمد،٤/ ٣٠٦،حديث:١٢٥٥١)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन ख़लफ़ कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى शर्हे बुख़ारी में लिखते हैं : ज़ुल्म तमाम शरीअ़तों में ह़राम था, ह़दीसे पाक में है : मज़लूम की दुआ़ रद नहीं की जाती अगर्चे वोह काफ़िर ही क्यूं न हो । इस ह़दीस का मा'ना येह है कि

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ मोमिन पर ज़ुल्म करने से नाराज़ होता है इसी त़रह़ काफ़िर पर ज़ुल्म से भी नाराज़ होता है।

(شرح بخاری لابن بطال،کتاب الزکاۃ،باب اخذ الصدقۃ من الاغنیاء،۳/۵۴۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़लूम जानवर की बद दुआ़

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरक़ात शर्हे मिश्कात के ह़वाले से लिखते हैं : मज़लूम जानवर बल्कि मज़लूम काफ़िर व फ़ासिक़ की भी दुआ़ क़बूल होती है अगर्चे मुसलमान मज़लूम की दुआ़ ज़ियादा क़बूल है, क्यूंकि मज़लूम मुज़त़र व बे क़रार होता (है) और बे क़रार की दुआ़ अ़र्श पर क़रार करती है, रब फ़रमाता है :

اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاہُ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या वोह जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे। (پ۲۰،النمل:۶۲))

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 300)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घोड़े ने कभी ठोकर क्यूं न खाई ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से इस्तिफ़्सार किया गया : क्या बात है कि आप के घोड़े ने कभी ठोकर नहीं खाई ? इरशाद फ़रमाया : मैं ने इस से कभी किसी मुसलमान की खेती को नहीं रौंदा। (فیض القدیر،۱/۴۰۰،تحت الحدیث:۵۱۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 27 खोटा सिक्का

राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपना वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : एक बार मैं अपने घोड़े पर सुवार हुवा ताकि एक मोटे और त़ाक़तवर ग़ैर मुस्लिम को क़त्ल करूं लेकिन मेरे घोड़े ने कोताही की तो मैं वापस लौट आया, फिर वोह मोटा ग़ैर मुस्लिम मेरे क़रीब हुवा तो मैं ने फिर उस पर ह़म्ला किया लेकिन इस बार भी घोड़े ने कोताही की। पस मैं वापस लौट आया, जब मैं ने तीसरी बार ह़म्ला किया तो मेरा घोड़ा मुझ से भाग गया ह़ालांकि उस की येह आ़दत न थी। चुनान्चे, मैं ग़मगीन हो कर वापस लौटा और शिकस्ता दिल सर झुका कर बैठ गया क्यूंकि वोह ग़ैर मुस्लिम मेरे हाथों क़त्ल होने से रह गया था नीज़ घोड़े की ऐसी आ़दत मैं ने कभी न देखी थी तो मैं ने ख़ैमे के सुतून पर अपना सर रखा जब कि मेरा घोड़ा खड़ा था। फिर मैं ने एक ख़्वाब देखा गोया कि मेरा घोड़ा मुझे मुख़ात़ब करते हुवे कह रहा था : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करो ! तुम ने तीन मरतबा इरादा किया कि तुम मेरी पीठ पर सुवार हो कर ग़ैर मुस्लिम को पकड़ो ह़ालांकि कल जो तुम ने मेरे लिये चारा ख़रीदा था उस की क़ीमत में खोटा दिरहम दिया था, तो येह (या'नी मुझ पर सुवार हो कर ग़ैर मुस्लिम को मारना) हरगिज़ नहीं हो सकता। फ़रमाते हैं : मैं घबरा कर बेदार हुवा और उस चारा बेचने वाले के पास जा कर वोह दिरहम तब्दील किया। इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی इस के बा'द लिखते हैं : येह हिकायत उस ज़ुल्म की मिसाल है जिस का ज़रर व नुक़्सान आ़म है तो दीगर मिसालों को इसी पर क़ियास कर लो। (احیاء علوم الدین،کتاب آداب الکسب،الباب الثالث،۲/۹۵)

﴾12﴿ अपनी जान और मख़्लूक़ पर रह़्म करो

आ'राबी का बारहवां सुवाल येह था कि मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़्म फ़रमाए। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपनी जान पर और मख़्लूक़े ख़ुदा पर रह़्म करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाएगा।

मिस्कीन पर रह़्म करो

मन्क़ूल है कि बनी इसराईल में हर बादशाह के साथ एक दाना शख़्स होता था, जब बादशाह को ग़ुस्सा आता तो वोह उसे एक काग़ज़ देता जिस पर लिखा होता : मिस्कीन पर रह़्म करो, मौत से डरो और आख़िरत को याद रखो ! बादशाह उसे पढ़ता तो उस का ग़ुस्सा ठन्डा हो जाता।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم الغضب،بیان علاج الغضب،۳/۲۱٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 28 कबूतरी की ख़ातिर ख़ैमा नहीं उखाड़

"फ़ुस्त़ात़" मुल्के मिस्र का एक मश्हूर शहर है, इस की बुन्याद सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रखी थी, जिस का वाक़िआ़ यूं बयान किया जाता है कि जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मिस्र फ़त्ह़ करने के बा'द सिने 20 हिजरी में इस्कन्दरिया रवाना होने लगे तो अपना ख़ैमा उखाड़ने का हुक्म दिया, हुक्म की ता'मील की जाने लगी तो नज़र आया कि उस के ऊपर तो एक कबूतरी ने अन्डे दे रखे हैं, येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :

हम अपने पड़ोसी का भी एह़तिराम करते हैं, जब तक इन अन्डों से बच्चे निकल कर उड़ने के क़ाबिल न हो जाएं इस को बाक़ी रखो। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी को उस ख़ैमे की ह़िफ़ाज़त पर मुक़र्रर भी कर दिया और इस्कन्दरिया जंग के लिये रवाना हो गए और उसे फ़त्ह़ कर लिया, जंग से फ़राग़त के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथियों से पूछा कि कहां ठहरने का इरादा है? वोह बोले : आप के उसी ख़ैमे पर ही वापस चलते हैं क्यूंकि वहां पानी भी है और वसीअ़ सह़रा भी, इस के बा'द वोह सब वहीं लौट आए और हर क़ौम ने ह़द बन्दियां कर के घर बनाना शुरूअ़ कर दिये, (यूं येह शहर आबाद हुवा) और इस का नाम "फ़ुस्त़ात़" (ख़ैमा) रख दिया गया।

(آثار البلاد و اخبار العباد، ۱/۲۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 29 तीनों रोटियां कुत्ते को खिला दीं

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़मीन को देखने निकले। रास्ते में एक बाग़ से गुज़रे तो आप ने देखा वहां एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम काम कर रहा है। जब उस का खाना आया तो उसी वक़्त एक कुत्ता भी बाग़ में दाख़िल हुवा और ग़ुलाम के क़रीब हो गया। ग़ुलाम ने एक रोटी उस के सामने डाल दी, कुत्ते ने वोह खा ली फिर दूसरी डाली तो वोह भी उस ने खा ली ग़ुलाम ने तीसरी रोटी भी डाल दी तो कुत्ता वोह भी खा गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सब कुछ मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे थे। आप ने ग़ुलाम से पूछा : तुम्हें

दिन में कितना खाना मिलता है ? उस ने कहा : वोही कुछ जो आप ने देखा। पूछा : तुम ने सारा खाना इस कुत्ते को क्यूं खिला दिया ? उस ने कहा : इस अ़लाक़े में कुत्ते नहीं होते येह कहीं दूर से आया था और भूका था, मुझे अच्छा नहीं लगा कि मैं पेट भर कर खाऊं और येह भूका रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : फिर तुम आज क्या करोगे ? उस ने कहा : भूका रहूंगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सोचा येह गुलाम तो मुझ से भी ज़ियादा सख़ी है, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाग़, बाग़बानी के आलात और गुलाम सब को ख़रीद लिया फिर गुलाम को आज़ाद कर के सब कुछ उसी को दे दिया।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم البخل،بیان الایثار وفضلہ،۳/۳۱۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ गुनाहों में कमी कैसे हो ?

आ'राबी का तेरहवां सुवाल येह था कि गुनाहों में कमी चाहता हूं। रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो, गुनाहों में कमी होगी।

इस्तिग़फ़ार और तौबा में फ़र्क़

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत व शर्मिन्दगी और आयिन्दा गुनाहों से बचने का इरादा तौबा है और मुआ़फ़ी चाहना इस्तिग़फ़ार। हम लोग गुनाह कर के तौबा करते हैं और ख़ास बन्दे गुनाह नहीं करते और तौबा करते हैं, ख़ासुल ख़ास नेकियां करते हैं और तौबा करते हैं कि ख़ुदाया ! तेरी शान के लाइक़ हम से नेकी न हो सकी। **शे'र**

زاھداں اَز گناہ توبہ کُنَنْدُ عارفاں اَز اطاعت اِستغفار

(नेक लोग गुनाहों से जब कि मा'रिफ़त रखने वाले अपनी नेकियों से तौबा करते हैं) (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 34)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 30 गुनाह कैसे गिन लेते थे ?

हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अपने गुनाहों की क़िल्लत के सबब उन्हें गिन कर रखते थे । ह़ज़रते सय्यिदुना रियाहुल क़ैसी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेरे चालीस से कुछ ज़ियादा गुनाह हैं और मैं ने हर गुनाह के लिये एक लाख मरतबा इस्तिग़फ़ार किया है । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن मक़रूज़ हो गए तो आप ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने चालीस साल पहले एक गुनाह का इरतिकाब किया था येह उस की सज़ा है मैं ने एक शख़्स को "**ऐ मुफ़्लिस**" कह दिया था। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان से इस बात का ज़िक्र किया गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : उन ह़ज़रात के गुनाह थोड़े होते थे इस लिये उन्हें पता चल जाता था कि येह मुसीबत किस गुनाह के बाइस आई है जब कि हम लोगों के गुनाह कसीर हैं इस लिये हमें इस बात का पता नहीं चलता ।

(رسائل ابن رجب، ١/٣٦٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 31 चार मसाइल का एक ही हल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में एक शख़्स ने आ कर क़ह़्त़ साली की शिकायत की तो आप ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो। दूसरे ने ग़ुरबत व इफ़्लास की शिकायत की तो फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो ! तीसरे ने नरीना औलाद के लिये दुआ़ की अ़र्ज़ की, फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो। चौथे शख़्स ने आ कर अपने बाग़ के ख़ुश्क हो जाने का ज़िक्र किया तो भी आप ने फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो। किसी ने पूछा : आप के पास चार आदमी अलग अलग मस्अला ले कर आए और आप ने सब को इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने अपनी त़रफ़ से तो कोई बात नहीं कही,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरए नूह़ में इरशाद फ़रमाता है :

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ یُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِیْنَ وَ یَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ یَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ؕ﴿۱۲﴾

(پ۲۹، النوح : ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो, बेशक वोह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है, तुम पर शर्राटे का मींह (या'नी मूसलाधार बारिश) भेजेगा, और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिये नह्रें बनाएगा।*

(الجامع لاحکام القران،پ۲۹،النوح،تحت الآیۃ : ۱۰،۹/۲۲۲،جزء:۱۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ शिकवा व शिकायत मत करो

आ'राबी का चौधवां सुवाल येह था कि मुअ़ज़्ज़ज़ या'नी ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला बनना चाहता हूं। ख़ातमुल मुर्सलीन,

www.dawateislami.net

रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में शिक्वा व शिकायत मत करो, सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त दार बन जाओगे ।

मख़्लूक़ के सामने शिकायत न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ज़ैर عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जब भी कोई मुसीबत नाज़िल हो तो मख़्लूक़ से उस की शिकायत करने से बचो और मेरे साथ उसी त़रह़ मुआ़मला करो जिस त़रह़ मैं करता हूं कि जब मुझ तक तेरे ख़िलाफ़े औला आ'माल पहुंचते हैं तो मैं फ़िरिश्तों के सामने ज़ाहिर नहीं करता इसी त़रह़ जब तुझ पर मुसीबत नाज़िल हो तो मेरी मख़्लूक़ से मेरी शिकायत न कर । (تنبیه المغترین،ص۱۷۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की जिस्मानी बीमारियों में मुब्तला रहे लेकिन किसी त़रह़ का शिक्वा व शिकायत मन्क़ूल नहीं बल्कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आज़माइशों में भी सब्र का दामन थामा और शदीद तक्लीफ़ में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया, चुनान्चे,

ह़िकायत : 32 शिकायत कैसी ?

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का बयान है :

एक मरतबा **आ'ला ह़ज़रत** (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) अ़लील थे, मैं इ़यादत को गया, ह़स्बे मुह़ावरा पूछा : हुज़ूर ! अब शिकायत का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : शिकायत किस से हो ? **अल्लाह** से न तो शिकायत पहले थी न अब है, बन्दे को ख़ुदा से कैसी शिकायत ! (सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मैं ने ज़िन्दगी भर के लिये इस मुह़ावरे से तौबा कर ली । (फ़तावा अमजदिया, 2 / 388)

बुख़ार की शिकायत, दर्द की शिकायत ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अ़वाम व ख़वास के येह भी ज़बान ज़द है कि बुख़ार की शिकायत है, दर्दे सर की शिकायत है, ज़ुकाम की शिकायत है, वग़ैरा वग़ैरा । येह न (कहना) चाहिये, इस लिये कि जुमला अमराज़ का ज़ुहूर **मिन जानिबिल्लाह** होता है तो शिकायत कैसी !!!

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 3 / 94)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शिकवा इ़बादत की लज़्ज़त को ख़त्म कर देता है

मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस ने अपनी मुसीबत का किसी से शिकवा किया उसे कभी इ़बादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी ।

(منهاج القاصدين،كتاب الصبر والشكر،ص١٠٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 33 एक लाख दीनार और मोहताजी का शिकवा

मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ज़ियादा मोह़ताज हो गए और परेशान ह़ाली ने उन के घर में बसेरा कर लिया। एक रात वोह सोए तो ख़्वाब में किसी ने कहा : क्या तुम येह चाहते हो कि तुम्हें "सूरए हूद" भूल जाए और तुम्हें हज़ार दीनार मिल जाएं ? बोले : नहीं। कहा : और अगर सूरए यूसुफ़ ? बोले : नहीं। (यूंही 100 सूरतों के बारे में सुवालात किये और सब के जवाब में उन्हों ने "नहीं" बोला)। कहा : तुम्हारे पास तो एक लाख दीनार का माल है फिर भी तुम मोह़ताजी का शिकवा करते हो ? जब सुब्ह़ हुई तो इस ख़्वाब की वज्ह से उन का ग़म दूर हो चुका था। (منهاج القاصدين،كتاب الصبر والشكر،ص١١٢٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 34 बुख़ार का तज़किरा ज़बान पर नहीं लाए

ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से किसी ने पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप कैसे हैं ? फ़रमाया : ख़ैरो आ़फ़िय्यत से हूं। कहने लगा : सुना है कल रात आप को बुख़ार था ? फ़रमाया : जब तुम्हें कह चुका हूं कि ख़ैरो आ़फ़िय्यत से हूं तो काफ़ी है, जो बात कहना नहीं चाहता वोह मत पूछो। (منهاج القاصدين،كتاب الصبر والشكر،ص١٠٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ रिज़्क़ में फ़राख़ी

आ'राबी का पन्दरहवां सुवाल येह था कि रिज़्क़ में कुशादगी चाहता हूं। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हमेशा बा वुज़ू रहो, तुम्हारे रिज़्क़ में फ़राख़ी आएगी।

शहादत की फ़ज़ीलत पाने का नुस्ख़ा

हर वक़्त बा वुज़ू रहना बड़ी सआ़दत की बात है और येह ज़ियादा मुश्किल भी नहीं, सिर्फ़ येह करना होगा कि जब भी वुज़ू टूट जाए दोबारा कर लिया जाए, रफ़्ता रफ़्ता आ़दत बन ही जाएगी लेकिन हर बार निय्यत करना न भूलियेगा। **मदीने** के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : **बेटा**! अगर तुम हमेशा बा वुज़ू रहने की इस्तित़ाअ़त रखो तो ऐसा ही करो क्यूंकि मलकुल मौत जिस बन्दे की रूह़ ह़ालते वुज़ू में क़ब्ज़ करें उस के लिये शहादत लिख दी जाती है।

(شُعَبُ الْاِیمان،۳/۲۹:حدیث۲۷۸۳)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हर वक़्त बा वुज़ू रहना, हर ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने का सबब पाए जाने) के बा'द मअ़न (या'नी फ़ौरन) वुज़ू करना मुस्तह़ब है।

(फ़तावा रज़विय्या, 1 / 702)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"अहमद रज़ा" के सात हुरूफ़ की निस्बत से हर वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल

इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बा'ज़ आ़रिफ़ीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ने फ़रमाया : जो हमेशा बा वुज़ू रहे **अल्लाह** तआ़ला उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए : ﴾1﴿ मलाइका उस की सोह़बत में रग़बत करें ﴾2﴿ क़लम उस की नेकियां लिखता रहे ﴾3﴿ उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करें ﴾4﴿ उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो ﴾5﴿ जब सोए **अल्लाह** तआ़ला कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्नो इन्स के शर से उस की हिफ़ाज़त करें ﴾6﴿ सकराते मौत उस पर आसान हो ﴾7﴿ जब तक बा वुज़ू हो अमाने इलाही में रहे। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 1 / 702)

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, मुरम्मम स. 102)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 35 रिज़्क़ में बरकत का बे मिसाल वज़ीफ़ा

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**चिड़या और अन्धा सांप**" के सफ़ह़ा 27 पर लिखते हैं : एक सह़ाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया : क्या वोह तस्बीह़ तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की जिस की बरकत से रोज़ी दी जाती है, जब सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो तो येह तस्बीह़ एक सो बार पढ़ा करो,

سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحٰنَ اللهِ الْعَظِيْم، اَسْتَغْفِرُ الله

दुन्या तेरे पास ज़लील हो कर आएगी। वोह सहाबी चले गए कुछ मुद्दत ठहर कर दोबारा हाज़िर हुवे, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या मेरे पास इस **कसरत** से आई, मैं हैरान हूं, कहां उठाऊं कहां रखूं ! (الخصائص الکبرٰی ج۲ ص۲۹۹ مُلَخَّصاً) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस तस्बीह़ का **विर्द** ह़त्तल इमकान तुलूए़ सुब्हे़ सादिक़ के साथ हो, वरना सुब्ह़ से पहले, जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बा'द को अ़दद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ले नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूए़ शम्स (या'नी सूरज निकलने) से पहले। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 128 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कारोबार चमकाने का नुस्ख़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم कागज़ पर 35 बार लिख कर घर में लटका दीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान का गुज़र न होगा और (रिज़्के ह़लाल में) ख़ूब बरकत होगी, अगर दुकान में लटकाएंगे और जाइज़ कारोबार हुवा तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब चमकेगा।

(شمس المَعارِف الکبری ولطائف العوارف ص۳۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾16﴿ अल्लाह व रसूल का मह़बूब

आ'राबी का सोलहवां सुवाल येह था कि **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم) का मह़बूब बनना चाहता हूं। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** व रसूल की मह़बूब चीज़ों को मह़बूब और ना पसन्द चीज़ों को ना पसन्द रखो।

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم के महबूब व पसन्दीदा बन्दे

यूं तो हर नेक काम करने वाला **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का पसन्दीदा है, मगर कुरआन व अहादीस में जिन अफ़राद को खुसूसिय्यत के साथ पसन्द का बन्दा क़रार दिया गया है उन में से बा'ज़ येह हैं : ۞ तवक्कुल करने वाला (پ٤،آلِ عمران:١٥٩) ۞ इन्साफ़ करने वाला (پ٦، المائدہ: ٤٢) ۞ मुत्तक़ी व परहेज़गार (پ١٠، التوبة:٤) ۞ तमाम मुआमलात में नर्मी से काम लेने वाला (بخاری، ٤/١٠٦، حدیث:٦٠٢٤) ۞ गोशा नशीन (مسلم، ص١٥٨٥، حدیث:٢٩٦٥) ۞ नेकूकार (ابن ماجہ، ٤/٣٥٠، حدیث:٣٩٨٩) ۞ कुरआने पाक की दुरुस्त त़रीक़े से तिलावत करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٧٢، حدیث:٥٥٩٠) ۞ सच बोलने वाला (کنزالعمال، ٨/٣٤٨، جزء:١٥، حدیث:٤٣٢٧١) ۞ पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक करने वाला ۞ औलाद के दरमियान इन्साफ़ करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٧١، حدیث: ٥٥٨٢) ۞ इयालदार और ह़ाजत मन्द होने के बा वुजूद सुवाल से बचने वाला (ابن ماجہ، ٤/٤٣٢، حدیث: ٤١٢١) ۞ आ़जिज़ी के त़ौर पर ज़ीनत को तर्क करने वाला (شعب الایمان، ٥/١٥٦، حدیث:٦١٧٦) ۞ रिज़्क़े ह़लाल के हुसूल के लिये जाइज़ पेशा इख़्तियार करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٦٩، حدیث: ٥٥٧٠) ۞ खजूर को पसन्द करने वाला (کنزالعمال، ٦/١٥٣، جزء:١٢، حدیث: ٣٥٢٩٦) ۞ बा ह़या (المعجم الکبیر، ١٠/١٩٦، حدیث: ١٠٤٤٢) ۞ ह़लीम व बुर्दबार

(المعجم الكبير، ١٠/١٩٦، حديث: ١٠٤٤٢) ۞ हुसूले सवाब की निय्यत से बेटियों की परवरिश करने वाला (كنز العمال، ٨/١٨٧، جزء:١٦، حديث:٤٥٣٧٢) ۞ हुसूले रिज़्क़े ह़लाल की कोशिश करने वाला (كنز العمال، ٢/٤، جزء:٤، حديث: ٩١٩٦) ۞ हुसूले सवाब की निय्यत से पड़ोसी की त़रफ़ से आने वाली तक्लीफ़ों को बरदाश्त करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٦٩، حديث: ٥٥٦٣) ۞ जवानी में तौबा करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٦٩، حديث: ٥٥٦٦) ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में जवानी गुज़ारने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٦٩، حديث: ٥٥٦٧) ۞ ग़मगीन दिल वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٧٢، حديث: ٥٥٩٥) ۞ दुन्या को ना पसन्द करने वाला (كنز العمال، ٢/٧٥، جزء:٣، حديث: ٦٠٦٤) ۞ गिड़ गिड़ा कर दुआ़ करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٧٠، حديث: ٥٥٧٨) ۞ ग़ैरत मन्द (جمع الجوامع، ٢/٢٧٢، حديث: ٥٦٠٠) ۞ सख़ी (كنز العمال، ٣/٢٧٢، جزء:٦، حديث: ١٧١٦٣) ۞ मज़लूम की मदद करने वाला (جمع الجوامع، ٢/٢٦٩، حديث: ٥٥٦٢) ۞ अमानतदार (كنز العمال، ٨/٣٤٨، جزء:١٥، حديث: ٤٣٢٧١) ۞ पोशीदा सदक़ा करने वाला (ترمذی، ٤/٢٥٥، حديث:٢٥٧٦) ۞ रात को उठ कर तिलावते कुरआन करने वाला (ترمذی، ٤/٢٥٥، حديث: ٢٥٧٦) ۞ इफ़्त़ार में जल्दी करने वाला (المعجم الكبير، ٢٢/٢٦٣، حديث:٦٧٦) ۞ आख़िरी वक़्त में सह़री करने वाला (المعجم الكبير، ٢٢/٢٦٣، حديث:٦٧٦) ۞ सफ़ की कुशादगी पुर करने वाला (المستدرك، ١/٥٦٠، حديث: ١٠٤٦)

अल्लाह तआ़ला हमें मज़्कूरा बाला भलाइयां करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم के ना पसन्दीदा बन्दे

कुरआनो ह़दीस में जिन बन्दों को ना पसन्दीदा क़रार दिया गया है उन में से चन्द येह हैं : ۞ ख़ियानत करने वाला (پارہ۵، النساء:۳٦) ۞ फ़ख़्र करने वाला (پارہ۱۰، الانفال:۵۸) ۞ फ़सादी (پارہ۲۰،القصص:۷۷) ۞ बुरी बात का ए'लान करने वाला (پارہ٦، النساء:۱٤۸) ۞ फ़ोह़्श गोई से काम लेने वाला (ابوداؤد،٤/۳۳۰،حدیث:٤۷۹۲) ۞ इस्बाल करने वाला (जब कि तकब्बुर के साथ हो)

(السنن الکبری للنسائی،٥/٤۸۸، حدیث: ۹۷۰٤)

इस्बाल : तहबन्द या पाइंचे टख़्नों से नीचे ख़ुसूसन ज़मीन तक रखना इस्बाल कहलाता है । (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 376)

۞ एह़सान जताने वाला ۞ गिड़ गिड़ा कर सुवाल करने वाला (شعب الایمان،٥/۱٦۳،حدیث:٦۲۰۲) ۞ जाहिल बूढ़ा (کنزالعمال،۸/۱۷،جزء:۱٦،حدیث: ٤۳۸۲۸) ۞ बूढ़ा ज़ानी (ترمذی،٤/۲٥٦، حدیث:۲٥۷۷) ۞ मुतकब्बिर फ़क़ीर (ترمذی،٤/۲٥٦، حدیث:۲٥۷۷) ۞ ज़ालिम मालदार (ترمذی،٤/۲٥٦، حدیث: ۲٥۷۷) ۞ भूक से ज़ियादा खाने वाला (کنزالعمال،۸/۳۷، جزء:۱٦،حدیث: ٤٤۰۲۲) ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से ग़ाफ़िल (کنزالعمال،۸/۳۷،جزء:۱٦،حدیث: ٤٤۰۲۲) ۞ सुन्नत का तारिक (کنزالعمال، ۸/۳۷،جزء:۱٦،حدیث: ٤٤۰۲۲) ۞ पड़ोसियों को तक्लीफ़ देने वाला (کنزالعمال، ۸/۳۷،جزء:۱٦،حدیث: ٤٤۰۲۲) ۞ ज़िन्दगी भर बुख़्ल

www.dawateislami.net

और मौत के वक़्त सख़ावत करने वाला (کنزالعمال،۲/۱۸۰، جزء:۳، حدیث: ۷۳۷۳) ۞ बुढ़ापे में जवान नज़र आने की कोशिश करने वाला (کنزالعمال،۳/۲۸٤،جزء:٦،حدیث: ۱۷۳۳۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मज़्कूरा बाला कामों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ गुस्सा मत करो

आ'राबी का सत्तरहवां सुवाल येह था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से अमान का त़लबगार हूं। **सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी पर गुस्सा मत करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से अमान पा जाओगे।

गुस्सा किसे कहते हैं ?

ग़ज़ब या'नी गुस्सा नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) करने पर उभारे। गुस्सा अच्छा भी है और बुरा भी, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये गुस्सा अच्छा है जैसे मुजाहिद ग़ाज़ी को कुफ़्फ़ार पर या किसी वाइज़ आ़लिम को फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार पर या मां बाप को ना फ़रमान औलाद पर आए और बुरा भी होता है जैसे वोह गुस्सा जो नफ़्सानिय्यत के लिये किसी पर आए। **अल्लाह** तआ़ला के लिये जो ग़ज़ब का लफ़्ज़ आता है वहां ग़ज़ब के मा'ना होते हैं नाराज़ी व क़हर क्यूंकि वोह नफ़्स व नफ़्सानिय्यत से पाक है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 655)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गुस्सा न करो

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़ुस्सा मत करो । उस ने कई बार येही सुवाल दोहराया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर बार येही फ़रमाया कि لَاتَغْضَبْ ग़ुस्सा मत किया करो ।

(بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ٤/١٣١، حدیث:٦١١٦)

गुस्सा न करने से क्या मुराद है ?

अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی लिखते हैं : अ़ल्लामा ख़त्ताबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने फ़रमाया : لَاتَغْضَبْ के मा'ना हैं कि ग़ुस्से के अस्बाब से बच और ग़ुस्से की वज्ह से जो कैफ़िय्यत होती है उसे अपने ऊपर त़ारी मत कर, यहां पर नफ़्से ग़ुस्सा से मन्अ़ नहीं किया गया क्यूंकि वोह तो त़बई चीज़ है जो कि इन्सान की फ़ित़रत में मौजूद होता है । बा'ज़ ह़ज़रात फ़रमाते हैं कि जिन्हों ने बारगाहे रिसालत में नसीह़त की दरख़्वास्त की थी शायद उन का मिज़ाज बहुत तेज़ और त़बीअ़त में ग़ुस्सा ज़ियादा था और मुबल्लिग़े आ'ज़म, नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह आ़दते मुबारका थी कि हर एक को उस की त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ हुक्म इरशाद फ़रमाते इसी लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ग़ुस्सा तर्क करने की वसिय्यत फ़रमाई । ह़ज़रते इब्ने तीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस जुम्ले لَاتَغْضَبْ में दुन्या व

आख़िरत की भलाई जम्अ़ फ़रमा दी क्यूंकि गुस्सा इन्सान को क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ की त़रफ़ ले जाता और नर्मी से रोकता है और बसा औक़ात येह इन्सान को مَغْضُوْب عَلَيْه (जिस पर गुस्सा आया है उस) की ईज़ा रसानी पर उभारता है और इस से दीन में कमी आती है।

(فتح الباری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ۱۰/۴۳۹، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुस्सा न करते

रावि़ये ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गुस्सा नहीं फ़रमाते थे, कोई आप को गुस्सा दिलाने की कोशिश करता तो इरशाद फ़रमाते : بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरकत अ़त़ा फ़रमाए। (سیر اعلام النبلاء، ۶/۵۱۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेहतर कौन और बुरा कौन ?

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमियों में से बा'ज़ को जल्द गुस्सा आता और जल्द चला जाता है पस एक दूसरे के साथ है[1] इन में से बा'ज़ को देर से गुस्सा आता और देर से जाता है पस एक दूसरे के साथ है तुम

1.....या'नी इन दोनों ख़स्लतों (गुस्से का जल्दी आना और जल्दी चले जाना) में से हर एक दूसरे के मुक़ाबले में है लिहाज़ा इन का फ़ाइल (जिसे गुस्सा जल्द आता और जल्द चला जाता है) अ़क़्ली त़ौर पर ता'रीफ़ या मज़म्मत का मुस्तह़िक़ नहीं क्यूंकि उस में दोनों ह़ालतें बराबर हैं लिहाज़ा न तो उसे दीगर लोगों से अच्छा कहा जा सकता है और न ही बुरा।

(مرقاۃ، کتاب الأداب، باب الامر بالمعروف، ۸/۸۷۷، تحت الحدیث: ۵۱۴۵)

में से बेहतर वोह हैं जिन को देर से गुस्सा आए और जल्द चला जाए और तुम में से बुरे वोह हैं जिन को जल्दी गुस्सा आए और देर से जाए। (مشکوٰۃ،کتاب الآداب،باب الامر بالمعروف، ۲/۲۳۹، الحدیث:۵۱۴۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 36 बे नज़ीर व बे मिसाल बुर्दबारी

हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि आप ने बुर्दबारी कहां से सीखी है ? फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से। पूछा गया ! वोह किस क़दर बुर्दबार थे ? फ़रमाया : एक मरतबा वोह अपने घर में बैठे थे कि एक लौंडी उन के पास सीख़ लाई जिस पर भुना हुवा गोश्त था, वोह उस के हाथ से गिर कर आप के एक छोटे साह़िबज़ादे पर जा गिरी, जिस के बाइ़स उस का इन्तिक़ाल हो गया। लौंडी येह देख कर डर गई तो उन्हों ने फ़रमाया : डरने की ज़रूरत नहीं ! मैं ने तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद किया।

(احیاء علوم الدین،کتاب ریاضۃ النفس،بیان علامات حسن الخلق، ۳/۸۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 37 येह बुढ़ापे की वज्ह से है

एक बूढ़े आदमी ने किसी त़बीब से कहा कि मेरी निगाह मोटी हो गई है, त़बीब ने कहा : बुढ़ापे की वज्ह से, वोह बोला :

ऊंचा सुनने लगा हूं, जवाब मिला : बुढ़ापे की वज्ह से, बोला : कमर टेढ़ी हो गई है, कहा : बुढ़ापे की वज्ह से, आख़िर में बूढ़ा बोला कि जाहिल त़बीब ! तुझे बुढ़ापे के सिवा कुछ नहीं आता ? जवाब मिला : येह बे मौक़अ़ गुस्सा भी बुढ़ापे की वज्ह से है।

(मिरक़ात) (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 224)

हिकायत : 38 गुनाह से नफ़रत है गुनाहगार से नहीं

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक शख़्स के पास से गुज़र हुवा जिस ने कोई गुनाह किया था और लोग उसे बुरा भला कह रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़याल है अगर तुम इस आदमी को किसी कुंवें में गिरा हुवा देखो तो इसे निकालोगे नहीं ? वोह बोले : बिल्कुल निकालेंगे। फ़रमाया : तो अपने भाई को बुरा भला मत कहो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करो कि उस ने तुम्हें इस गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा ! वोह बोले : क्या आप को येह बुरा नहीं लग रहा ? फ़रमाया : मुझे सिर्फ़ इस के अ़मल से नफ़रत है अगर वोह बुरे काम छोड़ दे तो मेरा भाई है।

(منهاج القاصدين،كتاب الامر بالمعروف،ص٥٢٤)

हिकायत : 39 बुर्दबारी हर दर्द की दवा है

किसी अ़क़्लमन्द के पास उस का एक दोस्त गया तो अ़क़्लमन्द ने उस के सामने खाना रखा, उस की बीवी इन्तिहाई बद अख़्लाक़ थी, उस ने आ कर दस्तर ख़्वान उठाया और अपने शोहर को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया, दोस्त येह मुआ़मला देख कर गुस्से की ह़ालत में बाहर निकल गया, अ़क़्लमन्द उस के पीछे गया

और कहा : उस दिन को याद करो जब हम तुम्हारे घर में खाना खा रहे थे और एक मुर्ग़ी दस्तरख़्वान पर आ गिरी थी जिस ने सारा खाना ख़राब कर दिया था लेकिन हम में से किसी को भी ग़ुस्सा न आया था। दोस्त ने कहा : हां बात तो येही है। अ़क़्लमन्द ने कहा : इस औ़रत को भी उस मुर्ग़ी की त़रह़ समझो। चुनान्चे, दोस्त का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया, वापस लौटा और कहने लगा : किसी दानिश वर ने सच कहा है कि **बुर्दबारी हर दर्द की दवा है।**

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم الغضب،بیان فضیلۃ الحلم،۳/۲۲۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾18﴿ ह़राम न खाओ

आ'राबी का अठ्ठारहवां सुवाल येह था कि दुआ़ओं की क़बूलिय्यत चाहता हूं। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़राम से बचो, तुम्हारी दुआ़एं क़बूल होंगी।

दुआ़ क़बूल नहीं होती

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان "**अह़सनुल विआ़**" में फ़रमाते हैं : खाने पीने लिबास व कसब में ह़राम से एह़तियात़ करे कि **ह़राम ख़्वार** व **ह़राम कार** (ह़राम खाने वाले और ह़राम काम करने वाले) की दुआ़ अक्सर रद होती है।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 60)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चालीस दिन तक क़बूलिय्यत से महरूम

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि मैं दुआ़ करता हूं लेकिन क़बूल नहीं होती ? सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सा'द ! ह़राम से बचो ! क्यूंकि जिस के पेट में ह़राम का लुक़्मा पड़ गया वोह चालीस दिन तक क़बूलिय्यत से मह़रूम हो गया ।" (تنبیہ الغافلین،باب الدعاء،ص۲۱۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 40 दुआ़ क़बूल न होने का सबब

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी मक़ाम से गुज़रे तो देखा कि एक शख़्स हाथ उठाए रो रो कर बड़े रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ में मसरूफ़े दुआ़ था । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उसे देखते रहे फिर बारगाहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू अपने इस बन्दे की दुआ़ क्यूं नहीं क़बूल कर रहा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! अगर येह शख़्स इतना रोए, इतना रोए कि इस का दम निकल जाए और अपने हाथ इतने बुलन्द कर ले कि आस्मान को छू लें तब भी मैं इस की दुआ़ क़बूल न करूंगा । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ इस की क्या वज्ह है ? इरशाद हुवा : येह **ह़राम** खाता और **ह़राम** पहनता है और इस के घर में **ह़राम** माल है । (عیون الحکایات،الحکایۃ الثانیۃ والخمسون بعد الثلاثمائۃ ،ص۲۱۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माले ह़राम का वबाल

ह़राम की कमाई से कोसों दूर रहने में ही भलाई है क्यूंकि इस में हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ बरकत नहीं हो सकती । ऐसा माल अगर्चे दुन्या में ब ज़ाहिर कुछ फ़ाएदा दे भी दे मगर आख़िरत में वबाले जान बन जाएगा लिहाज़ा इस की ह़िर्स से बचना लाज़िम है, चुनान्चे, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स **ह़राम माल** कमाता है और फिर सदक़ा करता है उस से क़बूल नहीं किया जाएगा और उस से ख़र्च करेगा तो उस के लिये उस में बरकत न होगी और उसे अपने पीछे छोड़ेगा तो येह उस के लिये **दोज़ख़** का ज़ादे राह होगा ।

(شرح السنۃ،کتاب البیوع، باب الکسب،٤/ ٢٠٥،حدیث:٢٠٢٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत :41 बे सब्री के बाइ़स ह़लाल रोज़ी से महरूमी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم मस्जिद में दाख़िल होने लगे तो मस्जिद के दरवाज़े पर मौजूद एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : मेरा येह ख़च्चर पकड़ लो । वोह शख़्स ख़च्चर की लगाम ले कर चला गया और ख़च्चर को वहीं छोड़ दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم नमाज़ से

www.dawateislami.net

फ़रागत के बा'द उस शख़्स के ख़च्चर पकड़ने के इ़वज़ उसे देने के लिये दो दिरहम ले कर मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि ख़च्चर बिग़ैर लगाम के खड़ा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़च्चर पर सुवार हो कर घर तशरीफ़ लाए और अपने ग़ुलाम को वोह दो दिरहम दे कर लगाम ख़रीदने के लिये भेजा। ग़ुलाम बाज़ार से वोही लगाम ख़रीद कर लाया जिसे चोर ने दो दिरहम के इ़वज़ फ़रोख़्त किया था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक बन्दा बे सब्री कर के अपने आप को ह़लाल रोज़ी से मह़रूम कर देता है और इस के बा वुजूद अपने मुक़द्दर से ज़ियादा ह़ासिल नहीं कर पाता।

(المستطرف،١/١٢٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किसी के खाने के बारे में तफ़्तीश न की जाए

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : शरए़ मुत़ह्हर में मस्लह़त की तह़सील से मुफ़्सिदा (या'नी नुक़्सान देह चीज़) का इज़ाला मुक़द्दम तर है मसलन मुसलमान ने दा'वत की (और) येह उस के माल व त़आ़म की तह़क़ीक़ात कर रहे हैं कहां से लाया ? क्यूंकर पैदा किया ? ह़लाल है या ह़राम ? कोई नजासत तो इस में नहीं मिली है ? कि बेशक येह बातें वह़्शत देने वाली हैं और मुसलमान पर बद गुमानी कर के ऐसी तह़क़ीक़ात में उसे ईज़ा देना है। ख़ुसूसन अगर वोह शख़्स शरअ़न मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम हो, जैसे आ़लिमे दीन या सच्चा मुर्शिद या मां बाप या उस्ताज़ या ज़ी इ़ज़्ज़त मुसलमान सरदारे क़ौम को इस ने (तह़क़ीक़ात कर के) और

www.dawateislami.net

बेजा किया, एक तो बद गुमानी दूसरे मूहि़श (या'नी वह़शत में डालने वाली) बातें, तीसरे बुज़ुर्गों का तर्के अदब। और (येह ख़्वाह म ख़्वाह का मुत्तक़ी बनने वाला) येह गुमान न करे कि ख़ुफ़्या तह़क़ीक़ात कर लूंगा, ह़ाशा व कल्ला ! अगर इसे ख़बर पहुंची और न पहुंचना तअ़ज्जुब है कि आज कल बहुत लोग पर्चा नवेस (या'नी बातें फेलाने वाले) हैं तो इस में तन्हा बररू (या'नी अकेले में इस से) पूछने से ज़ियादा रंज की सूरत है كَمَا هُوَ مُجَرَّبٌ مَعْلُوْمٌ (जैसा कि तजरिबा से मा'लूम है। ت) न येह ख़याल करे कि अह़बाब के साथ ऐसा बरताव बरतूंगा हैहात अह़िब्बा (दोस्तों) को रंज देना कब रवा है ? और येह गुमान कि शायद ईज़ा न पाए, हम कहते हैं शायद ईज़ा पाए, अगर ऐसा ही "शायद" पर अ़मल है तो उस के माल व त़आ़म की ह़िल्लत व त़हारत में "शायद" पर क्यूं नहीं अ़मल करता। मअ़ हाज़ा अगर ईज़ा न भी हुई और उस ने बराहे बे तकल्लुफ़ी बता दिया तो एक मुसलमान की पर्दादरी हुई (या'नी ऐ़ब खुल गया) कि शरअ़न नाजाइज़। ग़रज़ ऐसे मक़ामात में वरअ़ व एह़तियात़ की दो ही सूरतें हैं : या तो इस त़ौर पर बच जाए कि उसे (या'नी मेहमान नवाज़ को) इजतिनाब व दामन कशी पर इत्तिलाअ़ न हो या सुवाल व तह़क़ीक़ करे तो उन उमूर में जिन की तफ़्तीश मूजिबे ईज़ा नहीं होती मसलन किसी का जूता पहने है वुज़ू कर के उस में पाउं रखना चाहता है दरयाफ़्त कर ले कि पाउं तर हैं यूं ही पहन लूं وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس या कोई फ़ासिक़ बेबाक मुजाहिरे मो'लिन इस दरजा वक़ाह़त व बे ह़याई को पहुंचा हुवा हो कि उसे न बता देने में बाक हो, न दरयाफ़्त से सदमा गुज़रे, न उस से कोई फ़ित्तना मुतवक़्क़ेअ़ हो न इज़हारे ज़ाहिर में पर्दादरी

www.dawateislami.net

हो तो इन्दत्तह़क़ीक़ उस से तफ़्तीश में भी जरह़ नहीं, वरना हरगिज़ बनामे वरअ़ व एह़तियात़ मुसलमानों की नफ़रत व वह़्शत या उन की रुस्वाई व फ़ज़ीह़त या तजस्सुसे उ़यूब व मा'सिय्यत का बाइ़स न हो कि येह सब उमूर नाजाइज़ हैं और शुकूक व शुब्हात में वरअ़ न बरतना नाजाइज़ नहीं। अ़जब कि अम्रे जाइज़ से बचने के लिये चन्द ना रवा बातों का इरतिकाब करे येह भी शैत़ान का एक धोका है कि इसे मोह़तात़ बनने के पर्दे में मह़्ज़ ग़ैर मोह़तात़ कर दिया। ऐ अ़ज़ीज़ ! मदाराते ख़ल्क़ व उल्फ़त व मुवानसत (या'नी लोगों से अच्छी त़रह़ पेश आना और उल्फ़त व मह़ब्बत का बरताव करना) अहम उमूर से है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 4 / 526)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 42 परहेज़गारी या बद गुमानी

ह़ज़रते सय्यिदुना याक़ूत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि एक शख़्स ने मेरे सामने खाना रखा और उसे खाने पर इसरार किया। मैं ने उस खाने पर ज़ुल्मत (या'नी तारीकी) देखी तो कहा : "येह ह़राम है" और नहीं खाया। फिर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुर्सी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : मुरीदीन की जहालत में से एक बात येह भी है कि उन के सामने खाना रखा जाए और वोह उस खाने पर तारीकी देखें तो कहते हैं : येह ह़राम है। ऐ मिस्कीन ! तुम्हारी परहेज़गारी अपने मुसलमान भाई के बारे में तुम्हारी बद गुमानी के बराबर नहीं है। तुम ने येह क्यूं न कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये इस खाने का इरादा नहीं फ़रमाया।

(فیض القدیر ۱/۳۷۳،تحت الحدیث:٤٦٢)

www.dawateislami.net

﴾19﴿ रुस्वाई से बचने का त़रीक़ा

आ'राबी का उन्नीसवां सुवाल येह था कि मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे लोगों के सामने रुस्वा न फ़रमाए। **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपनी शर्मगाह की हि़फ़ाज़त करो, लोगों के सामने रुस्वा नहीं होगे।

कामयाब कौन ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़लाह़ को पहुंचने वाले (या'नी कामयाबी को पा लेने वाले) मोमिनीन का तज़किरा करते हुवे कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿۷﴾ (پ۱۸،المومنون:۵،۶،۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हि़फ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई़ बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं।*

शर्मगाह की हि़फ़ाज़त का मत़लब

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان शर्मगाहों की हि़फ़ाज़त का मत़लब बयान करते हुवे लिखते हैं : इस त़रह़ कि ज़िना और लवाज़िमे ज़िना से बचते हैं ह़त्ता कि ग़ैर का सत्र भी देखते नहीं।

(नूरुल इरफ़ान, पारह 18, अल मोमिनून, ज़ेरे आयत : 5)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 43 यूं बदलते हैं बदलने वाले

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में एक ह़सीनो जमील औ़रत ने एक दिन आईना देखते हुवे अपने शोहर से कहा : तुम्हारा क्या ख़याल है कि कोई ऐसा शख़्स होगा जो इस चेहरे को देखे और फ़ितने में न पड़े ? शोहर बोला : हां, पूछा : कौन ? शोहर बोला : उ़बैद बिन उ़मैर (ताबेई), वो बोली : ऐसी बात है तो मैं उन्हें फ़ितने में डाल कर दिखाऊं ? यूं शोहर की रिज़ामन्दी से वोह औ़रत मस्जिदुल ह़राम में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास मस्अला पूछने वाली बन कर आई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस औ़रत को ले कर एक त़रफ़ हो गए, अचानक औ़रत ने अपने चेहरे से निक़ाब हटा दिया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन फ़रमाया : ख़ुदा की बन्दी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! वोह बोली : मैं आप के फ़ितने में पड़ गई हूं, लिहाज़ा आप मेरी पेशकश पर ग़ौर कर लें । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं तुझ से चन्द सुवालात करता हूं, अगर तू सच बोलेगी तो फिर मैं तेरी पेशकश पर ग़ौर करूंगा । बोली : आप जो भी सुवाल करेंगे मैं सच ही बोलूंगी । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे येह बताओ कि जिस वक़्त मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने आएंगे क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : सच कहा, फिर फ़रमाया : जब तुझे क़ब्र में डाल दिया जाए फिर तुझे सुवालात के लिये बिठाया जाए क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : सच कहा, फिर फ़रमाया : जब लोगों के हाथों में नामए आ'माल दिया जाए और तुम्हें पता न हो कि तुम्हारे सीधे हाथ में नामए आ'माल दिया जाएगा या उलटे हाथ में ! तो क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सच कहा, फिर फ़रमाया : जब पुल सिरात़ से गुज़रने का वक़्त आए और तुम्हें पता न हो कि तुम नजात पाओगी या नहीं ! तो क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सच कहा, फिर पूछा : जब तुम्हें मीज़ाने अ़मल पर लाया जाए और तुम्हें मा'लूम न हो कि तुम्हारे नेक आ'माल का पल्ला भारी होगा या नहीं ! तो क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सच कहा, फिर फ़रमाया : जब तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुवालात के लिये खड़ा किया जाए क्या उस वक़्त तुम्हें येह पसन्द होगा कि मैं तुम्हारा येह काम करूं ? बोली : बिल्कुल नहीं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सच कहा, फिर फ़रमाया : ऐ ख़ुदा की बन्दी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर इन्आ़मो इकराम भी फ़रमाएगा और तुझे भलाई भी अ़त़ा फ़रमाएगा । इस के बा'द वोह औ़रत घर लौट आई तो शोहर बोला : क्या हुवा ? बोली : तुम भी बेकार हो और हम भी बेकार हैं, येह कह कर वोह नमाज़, रोज़े और दीगर इ़बादत में लग गई । (الثقات للعجلی، ۲/۱۱۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿ सख़्त तरीन गुनाह

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : 17 गुनाहे कबीरा बहुत सख़्त हैं : **चार दिल के :** (1) शिर्क व कुफ़्र (2) गुनाह पर अड़ने की निय्यत (3) **अल्लाह** की रह़मत से मायूसी (4) **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ी ? **चार ज़बान में :** (1) झूटी गवाही (2) पाक दामनों पर तोहमत (3) झूटी क़सम (4) जादू। **तीन पेट के गुनाह :** (1) यतीम का (माल) खाना (2) शराब पीना (3) सूद खाना। **दो शर्मगाह के :** (1) ज़िना (2) लिवात़त। **दो हाथ के :** (1) चोरी (2) नाह़क़ क़त्ल। **एक पाउं का :** (1) मैदाने जिहाद से भाग जाना। **एक सारे बदन का :** (1) या'नी वालिदैन की ना फ़रमानी।

(مرقاة المفاتيح،١/٢٢١،تحت الحديث:٥٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ पर्दापोशी

आ'राबी का बीसवां सुवाल येह था कि चाहता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी पर्दापोशी फ़रमाए। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने मुसलमान भाइयों के ऐब छुपाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी पर्दापोशी फ़रमाएगा।

ऐबपोशी करने वाले की क़ियामत के दिन पर्दापोशी होगी

मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ जो बन्दा दुन्या में किसी बन्दे की पर्दापोशी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा । (مسلم،كتاب البر والصلة،باب تحريم الظلم،ص١٣٩٤،حديث:٢٥٨٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अगर कोई ह़यादार आदमी नाशाइस्ता ह़रकत ख़ुफ़्या कर बैठे फिर पछताए तो तुम उसे ख़ुफ़्या (या'नी पोशीदा त़ौर पर) समझा दो कि उस की इस्लाह़ हो जाए, उसे बदनाम न करो, अगर तुम ने ऐसा किया तो **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत में तुम्हारे गुनाहों का ह़िसाब ख़ुफ़्या ही ले लेगा तुम्हें रुस्वा न करेगा, हां ! जो किसी की ईज़ा की ख़ुफ़्या तदबीरें कर रहा हो या ख़ुफ़्या ह़रकतों का आ़दी हो चुका हो उस का इज़्हार ज़रूर कर दो ताकि वोह शख़्स ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) से बच जाए या येह तौबा करे, येह क़ैदें ज़रूर ख़याल में रहें । ग़र्ज़े कि सिर्फ़ बदनामी से किसी को बचाना अच्छा है मगर उस के ख़ुफ़्या ज़ुल्म से दूसरे को बचाना या उस की इस्लाह़ करना भी अच्छा है, येह फ़र्क़ ख़याल में रहे । यहां (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि जो मुसलमान की एक ऐबपोशी करे रब तआ़ला उस की सात सो ऐब पोशियां करेगा । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 551)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 44 अब वोह औ़रत ग़ैर हो चुकी है

किसी की अपनी बीवी से जंग रहती थी उस के एक दोस्त ने पूछा कि तेरी बीवी में ख़राबी क्या है ? वोह बोला कि तुम मेरे

www.dawateislami.net

अन्दरूनी मुआ़मलात पूछने वाले कौन हो ? आख़िर उसे त़लाक़ दे दी, उस साइल ने कहा कि अब तो वोह तुम्हारी बीवी न रही अब बताओ उस में क्या ख़राबी थी ? येह बोला : वोह औ़रत ग़ैर हो चुकी मुझे किसी ग़ैर के उ़यूब बताने का क्या ह़क़ है ? येह है पर्दापोशी !!! (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 61)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन आ'माल ज़रूर करते

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर हम (फ़िरिश्ते) ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते तो तीन आ'माल को ज़रूर बजा लाते : मुसलमानों को पानी पिलाना, बाल बच्चे दार शख़्स की मदद करना और मुसलमानों से होने वाले गुनाहों की पर्दापोशी करना। (المستطرف، ١/٢٢٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 45 "असम" मश्हूर होने की वज्ह

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का नाम "असम (या'नी बहरा)" पड़ने की वज्ह येह है कि एक औ़रत आप की ख़िदमत में मस्अला पूछने के लिये ह़ाज़िर हुई, उसी दौरान उस की हवा ख़ारिज हो गई। इस पर वोह औ़रत बहुत शरमिन्दा हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : ज़रा

www.dawateislami.net

ऊंची आवाज़ में बोलो। इस पर औ़रत ख़ुश हो गई और समझी कि इन्हों ने वोह आवाज़ नहीं सुनी होगी, इस के बा'द से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का नाम असम पड़ गया।

(المستطرف،١/٢٤٧ ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बर्हना करने से बढ़ कर गुनाह

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने ह़वारियों से फ़रमाया : अगर तुम अपने भाई को इस ह़ाल में सोता पाओ कि हवा ने उस से कपड़ा हटा दिया है तो तुम क्या करोगे ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : उस की सत्रपोशी करेंगे और उसे ढांप देंगे। तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : बल्कि तुम उस का सत्र खोल दोगे। ह़वारियों ने तअ़ज्जुब करते हुवे कहा : येह कौन करेगा ? तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : तुम में से कोई अपने भाई के बारे में कुछ सुनता है तो उसे बढ़ा चढ़ा कर बयान करता है और येह उसे बर्हना करने से बड़ा गुनाह है। (احیاء علوم الدین،کتاب آداب الالفة،الباب الثانی،٢/ ٢٢٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पर्दापोशी की मुख़्तलिफ़ सूरतें और उन के अह़काम

किसी शख़्स का ऐसा फ़े'ल या क़ौल जिस का ज़ाहिर करना उसे ना पसन्द हो तो ۞ अगर वोह क़ौल या फ़े'ल ख़िलाफ़े शरीअ़त न हो तो उस की पर्दापोशी लाज़िम है और ۞ अगर वोह क़ौल या फ़े'ल शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो तो (देखा जाएगा) अगर उस के साथ **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ मुतअ़ल्लिक़ हो लेकिन इस पर

कोई हुक्मे शरई मसलन ह़द (जैसे ज़िना और चोरी की सूरत में) या ता'ज़ीर (जैसे ह़राम चीज़ों के सुनने और ख़िन्ज़ीर खाने की सूरत में) मुरत्तब न हो तो भी उसे छुपाना लाज़िम है और अगर उस पर कोई हुक्मे शरई मुरत्तब होता हो तो इस सूरत में जानने वाले शख़्स को इख़्तियार है कि इस मुआ़मले की पर्दापोशी करे या फिर उसे ह़ाकिम तक पहुंचा दे ताकि वोह उस शख़्स पर हुक्मे शरई को नाफ़िज़ करे अलबत्ता पर्दापोशी अफ़्ज़ल है मसलन किसी के ज़िना या शराब पीने पर मुत्तलअ़ हुवा तो उसे छुपाना बेहतर है और ۞ अगर वोह क़ौल या फ़े'ल जो ख़िलाफ़े शरीअ़त है उस का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से हो नीज़ उस में किसी शख़्स का नुक़्सान हो मसलन एक शख़्स ने दूसरे शख़्स की ग़ैर मौजूदगी में उसे ज़दो कोब या क़ैद करने या उस का माल लेने का इरादा ज़ाहिर किया या फिर उस पर कोई हुक्मे शरई मुरत्तब होता हो मसलन एक शख़्स की मौजूदगी में दूसरे शख़्स ने किसी को क़त्ल किया जिस पर क़िसास का हुक्म मुरत्तब होता है या फिर उस की मौजूदगी में किसी का माल ज़ाएअ़ किया जिस पर तावान का हुक्म लगता है तो उस शख़्स पर लाज़िम है कि ह़ाकिम को इस बात की इत्तिलाअ़ दे और ज़रूरत पड़ने पर इस मुआ़मले की गवाही दे और ۞ अगर वोह ख़िलाफ़े शरीअ़त क़ौल या फ़े'ल जिस का तअ़ल्लुक़ हुक़ूक़ुल इ़बाद से है उस में किसी का नुक़्सान न हो और न ही उस पर कोई हुक्मे शरई लगता हो या फिर उस पर हुक्मे शरई मुरत्तब तो होता हो लेकिन मुतअ़ल्लिक़ा शख़्स को उस क़ौल या फ़े'ल का इ़ल्म हो चुका है और उस ने उस शख़्स से गवाही देने का मुत़ालबा भी नहीं किया तो इस सूरत में पर्दापोशी लाज़िम है। (الحديقة الندية،٢/٢٦٣)

www.dawateislami.net

﴾21﴿ गुनाहों से मुआफ़ी का नुस्ख़ा

आ'राबी का इक्कीसवां सुवाल येह था कि कौन सी चीज़ मेरे गुनाहों को मिटा सकती है ? हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आंसू, आ़जिज़ी और बीमारी ।

रोने की फ़ज़ीलत

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो आंख आंसूओं से भर जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देता है और जो क़त़रा आंख से निकल कर रुख़्सार पर बह जाए उस चेहरे को ज़िल्लत व तंगदस्ती न पहुंचेगी । अगर किसी उम्मत में एक भी रोने वाला हो तो उस की वज्ह से सारी उम्मत पर रह़्म किया जाता है और हर चीज़ की एक मिक़्दार और वज़्न होता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से बहने वाला आंसू आग के समुन्दरों को बुझा देगा ।

(شعب الایمان ،باب فی الخوف من الله تعالی،۱/ ٤٩٤ ،حدیث:٨١١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िरिश्तों के आंसू

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र यज़ीद बिन अबान रक़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : बिलाशुबा अ़र्श के गिर्द कुछ फ़िरिश्ते हैं जिन की आंखें नहरों की त़रह़ क़ियामत तक जारी रहेंगी । वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ऐसे कांपते हैं जैसे शदीद हवा उन्हें

www.dawateislami.net

हिला जुला रही हो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! मेरी बारगाह में होते हुवे तुम्हें किस चीज़ का ख़ौफ़ है ? अ़र्ज़ करते हैं : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत जो हमें मा'लूम है अगर ज़मीन वालों को मा'लूम हो जाए तो खाना पानी उन के ह़ल्क़ से न उतरे, बिस्तरों पर लेट न पाएं, सह़राओं में निकल जाएं और गाए की त़रह़ डकराएं ।

(منهاج القاصدين،كتاب الرجاء والخوف،ص١١٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोने से दिलों का ज़ंग दूर होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते थे : गुनाह दिलों को ज़ंग आलूद कर देते हैं और येह ज़ंग सिर्फ़ रोने से ज़ाइल होता है । (تنبيه المغترين، ص١٠٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 46 अकेले रोने से गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस में इस क़दर रोए कि तमाम लोग आप के साथ रोने लगे और येह गुमान किया कि उन्हों ने येह बहुत बड़ा काम किया है तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से कहा : ऐ दोस्त ! जान ले, अगर एक गुनाह की वज्ह से तेरे साथ ज़मीनो आस्मान वाले भी रोएं तो येह भी कम है, फिर तू कैसे गुमान करता है कि तेरे अकेले रोने से गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (تنبيه المغترين، ص١٠٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रोने के अस्बाब

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मैसरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : रोना पांच चीज़ों की वज्ह से होता है ख़ुशी या ग़म से, दर्द या घबराहट से, रिया से और छटी वज्ह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोना है और वोह अचानक होता है अ़मल से नहीं, येही वोह रोना है जिस का एक आंसू (जहन्नम में) आग के कई पहाड़ों को बुझा देता है। (تنبیه المغترین،ص۲۵۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़जिज़ी करने वाले को बड़ा मर्तबा मिलेगा

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तकब्बुर से भी बरी हो जाओगे। (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال،۲/۴۹،جزء:۳، حدیث:۵۷۲۲)

हिकायत : 47 आ़जिज़ी का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब हज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम को तूफ़ान में ग़र्क़ फ़रमाया तो तमाम पहाड़ ऊंचे हो गए लेकिन जूदी पहाड़ ने आ़जिज़ी इख़्तियार की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने

उसे तमाम पहाड़ों पर बुलन्दी अ़ता फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कश्ती को उस पर ठहराया।

(المستطرف،۱/۲۲۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 48 बुज़ुर्ग मेहमान की आ़जिज़ी मरहबा !

मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग को दा'वत में बुलाने के लिये क़ासिद भेजा गया लेकिन बुज़ुर्ग से क़ासिद की मुलाक़ात न हो सकी, जब उन्हें इ़ल्म हुवा तो तशरीफ़ ले आए तब तक लोग खाना खा कर जा चुके थे। मेज़बान ने कहा : लोग तो जा चुके हैं। पूछा : कुछ बचा है ? अ़र्ज़ की : नहीं। पूछा : रोटी का कोई टुकड़ा ? अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : हन्डिया चाट लूंगा। मेज़बान ने अ़र्ज़ की : उसे तो हम धो चुके हैं। चुनान्चे, वोह बुज़ुर्ग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करते हुवे लौट आए। उन से इस बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : उस शख़्स ने हमें अच्छी निय्यत से बुलाया और अच्छी निय्यत से लौटा दिया।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الاکل،آداب الانصراف،۲/۲٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बीमार गुनाहों से पाक हो जाता है

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब मोमिन बीमार

होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से ऐसा पाक कर देता है जैसे भट्टी लोहे के ज़ंग को साफ़ कर देती है।

(الترغیب و الترھیب،کتاب الجنائز،الترغیب فی الصبر۔الخ،٤/١٤٦،حدیث:٤٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 49 तुझे येह ने'मत बिन मांगे मिली है

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : दो इबादत गुज़ारों ने पचास साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की, उन में से एक के जिस्म में ख़त़रनाक बीमारी लग गई, उस ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इल्तिजा की : ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं ने इतने साल तेरी इत़ाअ़त व इबादत की फिर भी मुझे इतनी ख़त़रनाक बीमारी में मुब्तला कर दिया गया, इस में क्या हिक्मत है? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया : उस से कहो : तू ने जो इबादतो रियाज़त की वोह हमारी ही अ़त़ाकर्दा तौफ़ीक़ से है, बाक़ी रही बीमारी तो मैं ने इस में तुझे इस लिये मुब्तला किया ताकि तुझे अबरारों (नेकूकार लोगों) के मर्तबे पर फ़ाइज़ कर दूं, तुझ से पहले के लोग तो बीमारी व मसाइब के ख़्वाहिश मन्द हुवा करते थे और तुझे तो मैं ने येह ने'मत बिन मांगे अ़त़ा की है। (عیون الحکایات،الحکایۃ الحادیۃ والخمسون بعد الثلاثمائۃ، ص٣١٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बीमारी नसीहत है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त"

जिल्द अव्वल सफ़्हा 802 पर है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बीमारियों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि **मोमिन** जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी **गुनाहों** से **कफ़्फ़ारा** हो जाती है और आयिन्दा के लिये नसीहत और **मुनाफ़िक़** जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल **ऊंट** की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला !

(سُنَنِ ابوداوٗد،کتاب الجنائز،باب الامراض۔۔الخ،۳/۲۴۵،حدیث: ۳۰۸۹ملخّصًا)

क्यूंकि मोमिन बीमारी में अपने गुनाहों से तौबा करता है वोह समझता है कि येह बीमारी मेरे किसी गुनाह की वज्ह से आई और शायद येह आख़िरी बीमारी हो जिस के बा'द मौत ही आए इस लिये उसे शिफ़ा के साथ मग़फ़िरत भी नसीब होती है । जब कि मुनाफ़िक़ ग़ाफ़िल येही समझता है कि फ़ुलां वज्ह से मैं बीमार हुवा था और फ़ुलां दवा से मुझे आराम मिला, अस्बाब में ऐसा फंसा रहता है कि मुसब्बिबुल अस्बाब पर नज़र ही नहीं जाती न तौबा करता है न अपने गुनाहों में ग़ौर । (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 424 माख़ूज़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾22﴿ सब से बड़ी अच्छाई

आ'राबी का बाईसवां सुवाल येह था कि कौन सी नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल है ? सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छे अख़्लाक़, तवाज़ोअ़ और मसाइब पर सब्र और तक़्दीर पर राज़ी रहना ।

हुस्ने अख़्लाक़ की अहमिय्यत

हर इन्सान की एक ज़ाहिरी और एक बातिनी सूरत होती है, ज़ाहिरी सूरत बसारत (या'नी ज़ाहिरी आंखों) से जब कि बातिनी सूरत बसीरत (या'नी दिल की आंखों) से नज़र आती है। ज़ाहिरी सूरत को ख़ल्क़ जब कि बातिनी सूरत को ख़ुलुक़ कहा जाता है। इन्सान की ज़ाहिरी और बातिनी दोनों सूरतों की एक हैअत होती है जो या तो ख़ूब सूरत होती है या फिर बद सूरत, बा'ज़ औक़ात इन्सान का ज़ाहिर ख़ूब सूरत और बातिन बद सूरत होता है जब कि बसा औक़ात बातिन ख़ूब सूरत और ज़ाहिर बद सूरत। एक इन्सान के लिये येह इन्तिहाई बुरी बात है कि उस का ज़ाहिर तो ख़ूब सूरत हो लेकिन बातिन क़बीह़ व बद सूरत, चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक दाना शख़्स ने किसी ख़ूब सूरत चेहरे वाले आदमी से कहा : घर तो बहुत अच्छा है लेकिन इस में रहने वाला बद सूरत है।

(اتحاف السادة المتقين،كتاب رياضة النفس،بيان حقيقة حسن الخلق،٨/٦٠٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छे और बुरे अख़्लाक़ की ता'रीफ़

इन्सान की बातिनी सूरत अगर अच्छी हो कि उस से अच्छे आ'माल बिग़ैर तकल्लुफ़ और ग़ौरो तफ़क्कुर के अदा हों तो उसे हुस्ने अख़्लाक़ से ता'बीर किया जाता है जब कि येही बातिनी सूरत अगर बुरी हो कि उस से बिला तकल्लुफ़ बुरे आ'माल सादिर हों तो उसे बद अख़्लाक़ी कहा जाता है।

(احياء علوم الدين،كتاب رياضة النفس،بيان حقيقة حسن الخلق،٣/٦٦ملخصاً)

www.dawateislami.net

अच्छे अख़्लाक़ से मुराद है ख़ल्क़ व ख़ालिक़ के हुक़ूक़ अदा करना, नर्म व गर्म ह़ालात में शाकिरो साबिर रहना ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 482)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से बेहतर कोई शै नहीं

साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है :

وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ وَمَا اُعْطِيَ اَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَّاَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ

या'नी जो सब्र चाहेगा **अल्लाह** उसे सब्र देगा और किसी को सब्र से बेहतर और वसीअ़ कोई चीज़ न मिली ।

(بخاری،کتاب الزکاۃ،باب الاستعفاف عن المسألۃ،۱/۴۹۶، حدیث:۱۴۶۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी रब तआ़ला की अ़त़ाओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़त़ा सब्र है कि रब तआ़ला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया : اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो (پ۲،البقرۃ:۱۵۳)) और साबिर के साथ **अल्लाह** होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक़्क़तें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दरजे ह़ासिल कर लेता है, रब तआ़ला ने (सय्यिदुना) अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में फ़रमाया : اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا हम ने उन्हें बन्दा

साबिर पाया (پ٢٣،صٓ:٤٤), सब्र ही की बरकत से ह़ज़रते हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सय्यिदुश्शुहदा हुवे। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 59)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत : 50 एक बुज़ुर्ग और क़ैदी दोस्त

किसी बुज़ुर्ग का एक दोस्त था जिसे बादशाह ने क़ैद कर दिया, उस ने अपने दोस्त को इत्तिलाअ़ दी और शिकवा भी किया। उन्हों ने पैग़ाम भिजवाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। बादशाह ने उसे सज़ा दी, उस ने फिर अपने दोस्त को इत्तिलाअ़ दी और शिकवा किया तो उन्हों ने फिर पैग़ाम भिजवाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। इसी दौरान दस्त की बीमारी में मुब्तला एक मजूसी (आतश परस्त) को लाया गया और उस के साथ क़ैद कर दिया गया, बेड़ी का एक कड़ा उस के पाउं में था तो दूसरा कड़ा मजूसी के पाउं में। उस ने फिर पैग़ाम भेजा तो दोस्त का जवाब मिला : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करो। मजूसी को क़ज़ाए ह़ाजत के लिये कई बार उठना पड़ता तो उसे भी मजबूरन साथ उठना पड़ता और मजूसी के फ़ारिग़ होने तक उस के साथ ठहरना पड़ता। क़ैदी दोस्त ने येह सब लिख कर दोस्त को भेजा तो जवाब मिला : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। क़ैदी दोस्त ने लिख कर भेजा : कब तक शुक्र करूं ? इस से बड़ी मुसीबत क्या हो सकती है ? बुज़ुर्ग दोस्त ने जवाब लिखा : अगर मजूसी की कमर में बंधा ज़ुन्नार (या'नी वोह धागा जो उन के कुफ़्रिय्या मज़हब की अ़लामत है) तुम्हारी कमर में होता तो तुम क्या करते ?

(احیاء علوم الدین،کتاب الصبر والشکر،بیان وجه اجتماع۔الخ،٤/ ١٥٨)

www.dawateislami.net

सब कुछ तक़्दीर में लिखा हुवा है

हर भलाई, बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इ़ल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था, अपने इ़ल्म से जाना और वोही लिख लिया।[1]

(बहारे शरीअ़त, 1 / 11)

बीनाई मिल जाने से ज़ियादा पसन्द है

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बूलिय्यते दुआ़ के ह़वाले से मश्हूर थे और लोग उन से दुआ़ करवाया करते थे जब कि उन की अपनी बीनाई ज़ाइल हो चुकी थी। किसी ने उन से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर आप अपनी बीनाई की बह़ाली के लिये भी दुआ़ फ़रमाएं तो कितना अच्छा हो ! इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना मुझे अपनी बीनाई के वापस मिल जाने से ज़ियादा पसन्द है।

(جامع العلوم والحکم،ص٤٥٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर मगर न करो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो येह मत कहो : "अगर मैं ऐसा करता तो मुझे फ़ुलां मुसीबत न पहुंचती।" बल्कि येह कहो : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

1.....अ़क़ाइद के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) के ह़िस्सए अव्वल का मुत़ालआ़ कीजिये।

ने ऐसा ही लिखा था और उस ने जो चाहा वोही किया।" क्यूंकि : "**अगर**" का लफ़्ज़ शैत़ानी अ़मल की इब्तिदा करता है।

(مسلم،کتاب القدر،باب فی الامر۔الخ،ص۱٤۳۲،حدیث۲٦٦٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : क्यूंकि येह कहने में दिल को रंज भी बहुत होता है, रब तआ़ला नाराज़ भी होता है। "अगर मैं अपना माल फ़ुलां वक़्त फ़रोख़्त कर देता तो बड़ा नफ़्अ़ होता मगर मैं ने ग़लत़ी की, कि अब फ़रोख़्त किया हाए बड़ी ग़लत़ी की" येह बुरा है लेकिन दीनी मुआ़मलात में ऐसी गुफ़्तगू अच्छी, यहां दुन्यावी नुक़्सानात मुराद हैं। इस अगर मगर से इन्सान का भरोसा रब तआ़ला पर नहीं रहता अपने पर या अस्बाब पर हो जाता है। ख़याल रहे कि यहां दुन्या के अगर मगर का ज़िक्र है दीनी कामों में अगर मगर और अफ़्सोस व नदामत अच्छी चीज़ है अगर मैं इतनी ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में गुज़ारता तो मुत्तक़ी हो जाता मगर मैं ने गुनाहों में गुज़ारी हाए अफ़्सोस ! येह अगर मगर इ़बादत है। अगर मैं हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़माने में होता तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़दमों पर जान कुरबान कर देता मगर मैं इतने अ़र्से बा'द पैदा हुवा हाए अफ़्सोस ! येह इ़बादत है।

आ'ला ह़ज़रत قدس سره ने फ़रमाया : शे'र

जो हम भी वां होते ख़ाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते ऊतरन
मगर करें क्या नसीब में तो येह ना मुरादी के दिन लिखे थे

लिहाज़ा येह ह़दीस उन अह़ादीस या आयात के ख़िलाफ़ नहीं जिन में لَو (अगर)" फ़रमाया गया। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 113)

www.dawateislami.net

हिकायत : 51 अपने नसीब पर ख़ुश रहने वाली औ़रत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल मलिक बिन क़ुरैब अस्मई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं एक क़बीले में गया तो वहां मैं ने लोगों में से सब से ख़ूब सूरत औ़रत को सब से बद सूरत शख़्स के निकाह़ में देखा, मैं ने उस औ़रत से कहा : क्या तू अपने लिये इस बात पर राज़ी है कि तू इस त़रह़ के शख़्स के निकाह़ में हो ? उस ने जवाब दिया : ख़ामोश हो जाओ ! तुम ने ग़लत़ बात की है, हो सकता है उस ने कोई नेकी की हो जिस की जज़ा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस का मुझ से निकाह़ कर दिया, या हो सकता है कि मैं ने कोई गुनाह किया हो जिस के इ़क़ाब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा उस से निकाह़ कर दिया हो तो क्या अब भी मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी न रहूं ? इस त़रह़ उस औ़रत ने मुझे ख़ामोश करा दिया ।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب النکاح،الباب الثالث،۲/ ۷٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तदबीर को तर्क न कीजिये

याद रहे कि मरज़ का इ़लाज करवाना या मुसीबतों को दूर करने की तदाबीर इख़्तियार करना या दुआ़ करना तक़्दीर के मुनाफ़ी नहीं बल्कि येह भी तक़्दीर के तह़्त ही होती हैं मगर तवक्कुल (या'नी भरोसा) ख़ालिक़े अस्बाब (या'नी रब عَزَّوَجَلَّ) पर होना चाहिये न कि अस्बाब पर या'नी रब तआ़ला चाहेगा तो ही हमारी तदबीर कामयाब होगी वरना नहीं । मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं ख़याल रहे कि

तदबीर भी तक़्दीर में आ चुकी है लिहाज़ा तदबीर से ग़ाफ़िल न रहो मगर इस पर ए'तिमाद न करो, नज़र **अल्लाह** की क़ुदरत व रह़मत पर रखो । (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 118) सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : आफ़तों और मुसीबतों से दफ़्अ़ की तदबीर और मुनासिब एह़तियातें अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का त़रीक़ा हैं । (پ۱۳، یوسف، زیرِ آیت:٦٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾23﴿ सब से बड़ी बुराई

आ'राबी का तेईसवां सुवाल येह था कि कौन सी बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ी है ? **सरकारे मदीनए मुनव्वरा,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुरे अख़्लाक़ और बुख़्ल ।

ह़िकायत : 52 बद अख़्लाक़ क़ाबिले रह़्म है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ सफ़र में एक बद अख़्लाक़ आदमी शरीक हो गया, आप उस की बद अख़्लाक़ी पर सब्र करते और उस की ख़ात़िर मदारत करते, जब वोह जुदा हो गया तो आप रोने लगे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया : मैं इस पर तरस खा कर रो रहा हूं कि मैं तो इस से अलग हो गया लेकिन इस की बद अख़्लाक़ी इस से अलग न हुई । (احیاء علوم الدین، کتاب ریاضة النفس، بیان فضیلة ۔۔الخ، ٣/٦٥)

बुख़्ल किसे कहते हैं ?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى बुख़्ल का मत़लब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : जहां ख़र्च करने की ज़रूरत है वहां रोक देना बुख़्ल है और जहां रोकना चाहिये वहां ख़र्च करना फ़ुज़ूल ख़र्ची है इन दोनों के दरमियान ए'तिदाल का रास्ता है और वोही मह़मूद है ।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم البخل،بیان حد السخاء۔الخ،۳/۳۲۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इरशाद फ़रमाते हैं : बुख़्ल के मा'ना है रोकना, इस्तिलाह़ में बुख़्ल येह है (कि) वहां (ख़र्च करने) से माल वग़ैरा का रोकना जहां से (रोकना) मुनासिब न हो, हुक़ूक़ का अदा न करना भी बुख़्ल है, ख़्वाह इन्सानों का ह़क़ अदा न करे या शरीअ़त का या **अल्लाह** तआ़ला का, लिहाज़ा ज़कात न देने वाला, अपने ह़ाजत मन्द मां बाप, बाल बच्चों, अहले क़राबत पर ख़र्च न करने वाला नीज़ अपने पर ख़र्च न करने वाला बख़ील (है), यूं ही ब वक़्ते ज़रूरत मुसलमानों पर ख़र्च न करने वाला, जिहाद में बा वुजूद ज़रूरत के सर्फ़ न करने वाला बख़ील (है) । (तफ़्सीरे नईमी, 4 / 377)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बख़ील जन्नत से दूर है

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सख़ी शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है लोगों

www.dawateislami.net

से क़रीब है, जन्नत से क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है जब कि बख़ील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है जन्नत से दूर है लोगों से दूर है और दोज़ख़ से क़रीब है।

(ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی السخاء،۳/۳۸۷،حدیث:۱۹۶۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 53 ख़ुश तबअ़ मेहमान और बख़ील मेज़बान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सुतूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक बार किसी दुन्यादार बख़ील शख़्स के दस्तर ख़्वान पर तशरीफ़ फ़रमा थे, उस ने भुना हुवा बछड़ा आप के आगे रखा, जब उस ने लोगों को बछड़े के टुकड़े करते देखा तो तंग दिल हो कर अपने ग़ुलाम से कहा : येह बच्चों के लिये ले जाओ। ग़ुलाम उसे उठा कर घर के अन्दर जाने लगा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस के पीछे हो लिये। अ़र्ज़ की गई : आप कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं? फ़रमाया : मैं बच्चों के साथ खाऊंगा। येह सुन कर मेज़बान बड़ा शरमिन्दा हुवा और ग़ुलाम को बछड़ा वापस लाने का कहा।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الاکل،آداب احضار الطعام،۲/۲۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾24﴿ पोशीदा सदक़े और सिलए रेह़मी की फ़ज़ीलत

आ'राबी का चौबीसवां सुवाल येह था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को क्या चीज़ ठन्डा करती है? हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक,

www.dawateislami.net

सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चुपके चुपके सदक़ा करना और सिलए रेह़्मी ।

सब से मज़बूत मख़्लूक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह कांपने लगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहाड़ों को पैदा फ़रमा कर उन्हें ज़मीन के लिये मेख़ें बना दिया और ज़मीन ठहर गई । फ़िरिश्तों को पहाड़ों की कुव्वत पर तअ़ज्जुब हुवा और उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ परवर दगार ! क्या तेरी मख़्लूक़ में पहाड़ों से भी त़ाक़तवर कोई चीज़ है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : लोहा । फ़िरिश्तों ने फिर इस्तिफ़्सार किया : क्या तेरी मख़्लूक़ में लोहे से भी मज़बूत़ कोई चीज़ है ? इरशाद फ़रमाया : आग । फ़िरिश्तों ने फिर वोही सुवाल किया तो इरशाद हुवा : पानी । फ़िरिश्तों ने वोही सुवाल दोहराया तो जवाब मिला : हवा । फ़िरिश्तों ने सुवाल किया : ऐ परवर दगार ! क्या तेरी मख़्लूक़ में कोई हवा से भी त़ाक़तवर है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : हां वोह इन्सान जो सीधे हाथ से सदक़ा करे और उसे अपने उल्टे हाथ से पोशीदा रखे ।

(ترمذی،کتاب التفسیر،۵/۲۴۲،حدیث:۳۳۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़ाहिरी अ़मल के मुक़ाबले में पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है । (شُعَبُ الْاِيمان، ٥/٣٧٦،حديث:٧٠١٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

थेली तो मिलती मगर देने वाले का पता न चलता

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन बन्दों के पास जो सजदे में होते दिरहमो दीनार से भरी थेलियां ले कर जाते और उन की चप्पलों के पास ऐसे अन्दाज़ में रख कर आ जाते कि उन्हें थेली का तो पता चल जाता मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पता नहीं लग पाता । किसी ने उन से अ़र्ज़ की : आप खुद जाने के बजाए किसी के हाथ थेलियां क्यूं नहीं भिजवाते ? फ़रमाया : मैं नहीं चाहता कि जब कभी वोह मेरे क़ासिद को देखा करें या मुझ से मिला करें तो एह़सान तले होने की वज्ह से शरमिन्दगी मह़सूस करें । (منهاج القاصدين،كتاب اسرار الزكاة،ص١٧٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 54 बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपनी ज़िन्दगी में दो मरतबा अपना सारा माल राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात किया और आप की सख़ावत का येह आ़लम था कि आप बहुत से ग़ुरबाए अहले मदीना के घरों में ऐसे **पोशीदा** त़रीक़ों से

www.dawateislami.net

रक़म भेजा करते थे कि उन ग़ुरबा को ख़बर ही नहीं होती थी कि **येह रक़म कहां से आती है** ? मगर जब आप का विसाल हो गया तो उन ग़रीबों को पता चला कि येह ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **सख़ावत** थी । (سیر اعلام النبلاء،۵/۳۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहले के मुसलमान अपने आ'माल छुपाने का कितना एहतिमाम करते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाया करते थे : एक शख़्स पूरा कुरआन ह़िफ़्ज़ कर लेता था लेकिन उस के पड़ोसी को इस बात की ख़बर न होती थी, वोह फ़िक़्ह का कसीर इ़ल्म ह़ासिल कर लेता था लेकिन लोगों को इस बात का पता न चलता था और वोह अपने यहां मुलाक़ातियों की मौजूदगी में रात में त़वील नमाज़ पढ़ता था लेकिन दूसरों को इस बात का इ़ल्म न हो पाता था । हम ने ऐसे लोगों को देखा है जो अपने आ'माल को छुपाने में मुबालग़ा करते थे । पहले के मुसलमान दुआ़ में ख़ूब कोशिश करते थे लेकिन उन की आवाज़ की जगह सिर्फ़ सरगोशी सुनाई देती थी क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ؕ

(پ۸،الاعراف:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता ।*

नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुन्तख़ब बन्दे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का तज़किरा करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝۳

(پ۱۶،مریم:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब उस ने अपने रब को आहिस्ता पुकारा ।

(تفسیر کبیر،۵/۲۸۱)

सिलए रेह़्मी की ता'रीफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली"** के सफ़ह़ा 5 पर लिखते हैं : **सिला** के मा'ना हैं : اِيْصَالُ نَوْعٍ مِّنْ اَنْوَاعِ الْاِحْسَان या'नी किसी भी क़िस्म की भलाई और एह़सान करना । (اَلزَّواجِر ج۲ص۱۵۶) और **रेह़्म** से मुराद : क़राबत, रिश्तेदारी है । (لِسانُ العَرب ج۱ص۱۴۷۹) "बहारे शरीअ़त" में है : **सिलए रेह़्म** के मा'ना : **रिश्ते को जोड़ना** है या'नी रिश्तेवालों के साथ नेकी और सुलूक (या'नी भलाई) करना । (बहारे शरीअ़त, 3 / 558)

रिज़ाए इलाही के लिये रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी और उन की बद सुलूकी पर उन्हें दर गुज़र करना एक अ़ज़ीम अख़्लाक़ी ख़ूबी है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां इस का बड़ा सवाब है ।

बेहतरीन आदमी की ख़ुसूसिय्यात

साह़िबे कुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन,** जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अच्छा कौन है ?"

www.dawateislami.net

फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, **सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो** और सब से ज़ियादा सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो। (مسند احمد، ۱۰/۴۰۲، حدیث: ۲۷۵۰۴)

हिकायत : 55 12 हज़ार दिरहम रिश्तेदारों को बांट दिये

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में 12 हज़ार दिरहम भेजे तो उन्हों ने येह रक़म अपने रिश्तेदारों को तक़्सीम कर दी। (اسد الغابۃ، ۷/۱۴۰ مُلَخَّصاً)

सिलए रेह़्मी करने के 10 फ़ाएदे

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सिलए रेह़्मी करने के 10 फ़ाएदे हैं : ❁ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल होती है ❁ लोगों की ख़ुशी का सबब है ❁ फ़िरिश्तों को मसर्रत होती है ❁ मुसलमानों की त़रफ़ से उस शख़्स की ता'रीफ़ होती है ❁ शैत़ान को इस से रंज पहुंचता है ❁ उ़म्र बढ़ती है ❁ रिज़्क़ में बरकत होती है ❁ फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अजदाद (या'नी मुसलमान बाप-दादा) ख़ुश होते हैं ❁ आपस में मह़ब्बत बढ़ती है ❁ वफ़ात के बा'द उस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूंकि लोग उस के ह़क़ में दुआए ख़ैर करते हैं। (تَنبیۃُ الغافِلین، باب صلۃ الرحم، ص۷۳)

नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ज़रा ज़रा सी बातों पर अपनी बहनों, बेटियों, फूफियों, ख़ालाओं, मामूओं, चचाओं, भतीजों, भांजों वग़ैरा से क़त्ए़ रेह़्मी कर लेते हैं उन लोगों के लिये बयान कर्दा ह़दीसे पाक में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। मेरी मदनी इल्तिजा है कि अगर आप की किसी रिश्तेदार से नाराज़ी है तो अगर्चे रिश्तेदार ही का क़ुसूर हो सुल्ह़ के लिये ख़ुद पहल कीजिये और ख़ुद आगे बढ़ कर ख़न्दा पेशानी के साथ उस से मिल कर तअ़ल्लुक़ात संवार लीजिये।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾25﴿ दोज़ख़ की आग कौन सी चीज़ बुझाती है

आ'राबी का पच्चीसवां सुवाल येह था कि कौन सी चीज़ दोज़ख़ की आग को बुझाती है ? **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रोज़ा।

ह़िकायत : 56 मौत के वक़्त रोने का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मौत का वक़्त क़रीब आया तो रोने लगे, जब वज्ह दरयाफ़्त की गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं मज़ीद ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश में नहीं रो रहा बल्कि

1.....मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "**हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली**" ज़रूर पढ़िये।

www.dawateislami.net

मुझे तो मौसिमे गर्मा की सख़्त दोपहर में (रोज़े की ह़ालत में) प्यासा रहना और मौसिमे सर्मा में रातों का क़ियाम करना याद आ रहा है।

(حلیة الاولیاء، ۲/ ۱۰٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"याद्दे रमज़ान" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ल रोज़ों के 8 मदनी फूल

﴾1﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : अगर किसी ने एक दिन नफ़्ल रोज़ा रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा। (مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی، ۵/ ۳۵۳، حدیث: ٦١٠٤)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से आ़शिक़ाने रसूल की एक ता'दाद नफ़्ली रोज़े रखने की सआ़दत पाती है, आसानी और तरग़ीब के लिये उन की तन्ज़ीमी त़ौर पर दरजा बन्दी की गई है जो ह़स्बे ज़ैल है :﴾

﴾2﴿ **आ़शिक़ाने रोज़ा की तन्ज़ीमी दरजा बन्दी :**

﴾**मुमताज़**﴿ जो सौमे दावूदी या'नी एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखे या महीने में कम अज़ कम 15 रोज़े अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ रखे या पांच ममनूआ़ अय्याम के इलावा सारा साल रोज़े रखे (ईदुल फ़ित्र और 10, 11, 12, 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रोज़ा रखना मकरूहे तह़रीमी है। (دُرِّ مُختار وردالمحتار، ۳/ ۳۹۱))

﴾**बेहतर**﴿ जो हर पीर शरीफ़ और जुमा'रात का रोज़ा रखे (पीर और जुमा'रात का रोज़ा सुन्नत है, अलबत्ता जो अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ मदनी माह में सात रोज़े रख ले वोह भी तन्ज़ीमन "बेहतर" में शुमार होगा) ﴾**मुनासिब**﴿ जो हर पीर शरीफ़ को या मजबूरी हो तो

हफ़्तावार छुट्टी वाले दिन रोज़ा रखे (यूं महीने में चार या पांच रोज़े होंगे) ﴾3﴿ **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना **वाजिब** हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (دُرِّمُختار،٣/٤٧٣) ﴾4﴿ मुलाज़िम या मज़दूर अगर नफ़्ल रोज़ा रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुलाज़मत या मज़दूरी पर रखा है उस) की इजाज़त ज़रूरी है और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं। (ردالمحتار٣/ ٤٧٨) (अगर वक़्फ़ के इदारे में मुलाज़िम हैं और नफ़्ल रोज़ा रखने की सूरत में काम पूरा नहीं कर सकते तो किसी की इजाज़त कार आमद नहीं, मुलाज़मत करने वाले बारहा समझते हैं कि रोज़े की वज्ह से उन के काम में ह़रज वाक़ेअ़ नहीं हो रहा ह़ालांकि बसा औक़ात बहुत ज़ियादा रुकावट पड़ रही होती है ख़ुसूसन अ़वामी मक़ामात पर काम करने वाले, होटलों पर खाना पकाने वाले, मेज़ों पर पहुंचाने वाले या मज़दूर वग़ैरहा तो इन का अपने ज़ेह्न में एक आध मरतबा समझ लेना काफ़ी नहीं कि काम में ह़रज नहीं हो रहा बल्कि निहायत ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि कहीं नफ़्ल रोज़े के शौक़ में इजारे के काम में सुस्ती कर के ह़राम कमाई कमाने के मुरतकिब न हों। ख़ुसूसन दीनी मदारिस के असातिज़ा को इस मस्अले का ख़याल रखना ज़ियादा ज़रूरी है कि उन्हें तो कोई नफ़्ल रोज़ों में रुख़्सत की इजाज़त भी नहीं दे सकता) ﴾5﴿ त़ालिबे इ़ल्मे दीन अगर अपनी ता'लीम में मा'मूली सा भी ह़रज देखे तो हरगिज़ नफ़्ल रोज़ा न रखे बल्कि वोह हफ़्तावार छुट्टी के दिन रोज़ा रख कर "मुनासिब" का दरजा ह़ासिल कर सकता है नीज़ मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरीन थोड़ी सी भी कमज़ोरी मह़सूस करें तो नफ़्ल रोज़ा न रखें ताकि ह़ुसूले इ़ल्मे दीन और नेकी की

www.dawateislami.net

दा'वत के अफ़्ज़ल तरीन काम में कमज़ोरी रुकावट न बने (अगर इलावा अज़ीं कारकर्दगी में तसल्सुल है तो मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की वज्ह से रह जाने वाले रोज़ों से तन्ज़ीमन दरजा बन्दी पर असर नहीं पड़ेगा) ﴾6﴿ जहां भी नफ़्ल रोज़े के सबब किसी अफ़्ज़ल काम में ह़रज वाक़ेअ़ होता हो वहां रोज़ा न रखे मसलन अगर किसी इस्लामी भाई की ज़िम्मेदारी इस नोइय्यत की है जहां अ़वाम से ब कसरत वासित़ा पड़ता है और रोज़ा रखने से उस के मिज़ाज में तुरशी पैदा हो जाती है तो अगर्चे काम पूरा हो जाता हो लेकिन लोगों के साथ बद अख़्लाक़ी से बचना नफ़्ल रोज़ों के मुक़ाबले में ज़ियादा ज़रूरी है। ﴾7﴿ मां बाप अगर बेटे को **नफ़्ल रोज़े** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इत़ाअ़त करे। (رَدُّالْمُحتار،٣/٤٧٨) ﴾8﴿ शोहर की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती। (دُرِّمُختار،٣/٤٧٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देने का जज़्बा मिला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और इस के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये, आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेश करता हूं : चुनान्चे, मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मेरी उ़म्र के 25 बरस गुज़र चुके थे मगर मैं इ़ल्मे दीन से इस क़दर कोरा था कि मुझे नमाज़ रोज़े के बुन्यादी शरई अह़काम तक न मा'लूम थे। एक दिन मैं मस्जिद में नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हुवा तो मुझ से एक इस्लामी भाई ने मुलाक़ात की, इसी दौरान

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत भी दी। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से ना आश्नाई के बाइस मैं ने शुरूअ़ में तो इन्कार कर दिया मगर हमारे मह़ल्ले की मस्जिद के इमाम साहिब ने मेरी हिम्मत बंधाई और मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये आमादा कर लिया। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के बा'द सुब्ह़ मदनी क़ाफ़िले ने सफ़र करना था। इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर मेरे अमीरे क़ाफ़िला ढूंडते हुवे मुझ तक आ पहुंचे, मैं दुन्या की मह़ब्बत का शिकार इतनी देर मस्जिद में रहने से उकता सा गया था और मज़ीद 3 दिन मस्जिद में रहने से घबरा रहा था, लिहाज़ा मैं अपने मोह़सिन पर ही ग़ुस्सा करने लगा कि "मैं आप को नहीं जानता मुझे किसी मदनी क़ाफ़िले में नहीं जाना, आप बराए करम ! मुझे घर जाने दें।" मगर अमीरे क़ाफ़िला ने मेरी तवक़्क़ोआ़त के बर अ़क्स मुझ पर ग़ुस्सा करने के बजाए इत़मीनान से मेरी बात सुनी और निहायत शफ़्क़त और नर्मी से मुझे समझाना शुरूअ़ किया और मिन्नत समाजत करते हुवे दोबारा मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर राज़ी कर लिया। मदनी क़ाफ़िले के पहले ही दिन जब मदनी क़ाफ़िले वालों ने सीखने सिखाने के मदनी ह़ल्क़े लगाए तो मुझे दिल ही दिल में बेह़द नदामत हुई कि मुझे तो बुन्यादी मसाइल भी नहीं मा'लूम ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में 3 दिन गुज़ारने के बा'द मैं बहुत सारा इ़ल्मे दीन मसलन वुज़ू व ग़ुस्ल और नमाज़ के अह़काम सीख कर और दीने मतीन की ख़िदमत का जज़्बा ले कर इस ह़ाल में घर पलटा कि मेरे सर पर मदनी क़ाफ़िले की याद दिलाता हुवा सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ भी था।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳٤۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ٦۰٦ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۰ھ
الجامع لاحکام القرآن	ابوعبداللہ محمد بن احمد الانصاری قرطبی، متوفی ٦۷۱ھ	دارالفکر، بیروت
تفسیر مدارک	امام عبداللہ محمد بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱٤۲۱ھ
تفسیر صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوفی، متوفی ۱۲٤۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۲۱ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۰ھ
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ، لاہور
تفسیر خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳٦۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر نورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
صراط الجنان	شیخ الحدیث والتفسیر مفتی ابوصالح محمد قاسم القادری	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵٦ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱٤۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲٦۱ھ	دارابن حزم، بیروت ۱٤۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱٤۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲٤۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱٤۲۰ھ

www.dawateislami.net

مستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ٤٠٥ھ	دارالمعرفہ بیروت ١٤١٨ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤٥٨ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
شرح السنۃ	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ٥١٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤٢٤ھ
فردوس الاخبار	الحافظ شیرویہ بن شہر دار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ٥٠٩ھ	دارالفکر، بیروت ١٤١٨ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ٧٤٢ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٤ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیثمی، متوفی ٨٠٧ھ	دارالفکر، بیروت ١٤٢٠ھ
مسند ابویعلی	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ٣٠٧ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٨ھ
السنن الکبری	امام ابوعبدالرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ٣٠٣ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١١ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٥ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ٩٧٥ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ٦٥٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٨ھ
جامع العلوم والحکم	عبدالرحمٰن بن شہاب الدین بن رجب حنبلی، متوفی ٧٩٥ھ	المکتبۃ الفیصلیہ، مکۃ المکرمہ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ٤٣٠ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٩ھ
جامع بیان العلم وفضلہ	حافظ ابوعمر یوسف بن عبداللہ بن عبدالبر، متوفی ٤٦٣ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٨ھ
شرح البخاری لابن بطال	ابوالحسن علی بن خلف بن عبدالمالک ٤٤٩ھ	مکتبہ الرشد، الریاض
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ١٠١٤ھ	دارالفکر، بیروت ١٤١٤ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ١٠٣١ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٢ھ
مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ١٣٩١ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
عالمگیری	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفی ١١٦١ھ	دارالفکر، بیروت ١٤٠٣ھ
درمختار	علاء الدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ١٠٨٨ھ	دارالمعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
ردالمحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ١٢٥٢ھ	دارالمعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ١٣٤٠ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ١٤١٨ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
ملفوظات اعلیٰ حضرت	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ١٤٠٢ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فتاوی امجدیہ	علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبہ رضویہ، کراچی ١٤١٩ھ
خصائص الکبری	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت

www.dawateislami.net

الثقات للعجلی	احمد بن عبداللہ بن صالح ابوالحسن العجلی، متوفی ۲۶۱ھ	المدینۃ المنورۃ
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
اسد الغابۃ	عزالدین ابوالحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
سیرت ابن عبدالحکم	ابومحمد عبداللہ بن عبدالحکم، متوفی ۲۱۴ھ	مکتبہ وہبہ
الخیرات الحسان	شیخ شہاب الدین احمد بن حجر ہیتمی مکی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۹۸۳ء
حیات اعلیٰ حضرت	ملک العلماء ظفر الدین بہاری	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
اللمع	ابونصر عبداللہ بن علی السراج طوسی، متوفی ۳۷۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۳۸۰ھ
ادب الدنیا والدین	ابوالحسن علی بن محمد بن حبیب الماوردی، متوفی ۴۵۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۸ھ
الفقیہ والمتفقہ	حافظ ابوبکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۲ھ	دار ابن جوزی ۱۴۲۸ھ
مجموعہ رسائل لابن رجب	زین الدین ابوالفرج عبدالرحمٰن بن احمد بن رجب الحنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	الفاروق الحدیثہ، القاہرہ ۱۴۲۴ھ
کیمیائے سعادت	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
منہاج القاصدین	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷	دارالتوفیق، دمشق ۱۴۳۱ھ
تنبیہ المغترین	عبدالوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابواللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دارالکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
عیون الحکایات	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
الزہد الکبیر	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ ۱۴۱۷ھ
اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
الزواجر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت
راحت القلوب	حضرت سلطان خواجہ نظام الدین اولیاء، متوفی ۷۲۵ھ	دہلی
آثار البلاد واخبار العباد	زکریا بن محمد بن محمود القزوینی	دارصادر، بیروت
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفی ۸۵۰ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
الحدیقۃ الندیۃ	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ	پشاور
شمس المعارف الکبریٰ	امام احمد بن علی البونی ۶۲۲ھ	مکتبہ انوار الہدیٰ، کوئٹہ، پاکستان
کتاب التعریفات	العلامۃ ابوالسید الشریف علی بن محمد بن علی الجرجانی الحنفی، متوفی ۸۱۶ھ	دارالمنار
لسان العرب	جمال الدین محمد بن مکرم ابن منظور الافریقی، متوفی ۷۱۱ھ	مؤسسۃ الأعلمی للمطبوعات بیروت ۱۴۲۶ھ
فضائل دعاء	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضی اللہ عنہ ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
बादशाह तन्दुरुस्त हो गया	1	हर चीज़ अच्छी लगने लगती है	20
आ'राबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा ﷺ के जवाबात	2	जो मुक़द्दर में नहीं वोह किसी त़रह़ न मिलेगा	20
नसीह़त व ह़िक्मत के 25 मदनी फूल	6	नसीब से ज़ियादा मिलेगा न कम	20
सुवाल पूछने की इजाज़त त़लब की	6	क़नाअ़त कर लेता हूं	21
सुवाल इ़ल्म की चाबी है	7	बक़दरे किफ़ायत कमाते	21
इ़ल्म में इज़ाफ़े का राज़	7	अगर तुम क़नाअ़त करते तो !	22
सुवाल पूछने से न शर्माएं	8	एक रोटी पर गुज़ारा	23
सुवाल करने के आदाब	8	अभी क्या कर रहा हूं	23
ख़ामोशी ह़िक्मत है	9	दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाओ	25
बम्बई के मकान का भाव कैसे पता चाला ?	10	कुछ ख़र्च किये बिग़ैर सदक़े का सवाब कमाइये	26
ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत	10	हर गुठली के इ़वज़ एक दिरहम	28
इ़ल्म वाले अल्लाह से डरते हैं	10	पड़ोस के चालीस घरों पर ख़र्च किया करते	28
ह़िक्मत की अस्ल	12	30 हज़ार नफ़्अ़ वापस लौटा दिया	29
ख़ौफ़ के दरजात	12	दूसरों के लिये भी वोही पसन्द करो	30
ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़लामात	13	कामिल मोमिन की एक निशानी	30
ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बीमार दिखाई देते	14	जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये	31
फ़िरिश्तों का ख़ौफ़	15	बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र	31
उम्मुल मोमिनीन का ख़ौफ़े ख़ुदा	15	दीनारों भरी थेली	32
ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले के साथ निकाह़ कर दो	16	पसन्द की चीज़ खिला दी	33
ग़नी बनने का त़रीक़ा	17	एह़साने अ़ज़ीम की अ़ज़ीम मिसाल	33
क़नाअ़त का मत़लब	17	बिल्ली नहीं रखी	34
कामयाबी का रास्ता	17	खोटा सिक्का	35
ज़ियादा ग़नी कौन ?	18	ज़िक्रुल्लाह की कसरत करो	36
ग़ना का तअ़ल्लुक़ दिल से है माल से नहीं	18	ज़िन्दा और मुर्दा की मिसाल	36
कभी न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना	19	ज़िक्र की अक़्साम	37
क़नाअ़त की वज्ह से रिज़्क़ में कमी नहीं होगी	19	जुनून की दवा	38
क़नाअ़त से इ़ज़्ज़त बढ़ जाती है	19	जन्नत में भी अफ़्सोस !	38

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
मुर्ग़ क्या कहता है ?	39	गुनाह कैसे गिन लेते थे ?	58
जहां ज़िक्र होता है हर चीज़ गवाह हो जाती है	39	चार मसाइल का एक ही ह़ल	58
पहाड़ों को कलिमा पढ़ कर गवाह क्यूं नहीं कर लेते ?	40	शिकवा व शिकायत मत करो	59
मिट्टी के ढेलों को अपने ईमान का गवाह बनाने का इन्आ़म	41	मख़्लूक़ के सामने शिकायत न करो	60
अपने ईमान पर गवाह बनाया है	42	शिकायत कैसी ?	60
वस्वसे का इ़लाज	42	बुख़ार की शिकायत, दर्द की शिकायत ?	61
जानवर भी ज़िक्रुल्लाह करते हैं	43	शिकवा इ़बादत की लज़्ज़त को ख़त्म कर देता है	61
नेक बनने का नुस्ख़ा	43	एक लाख दीनार और मोह़ताजी का शिकवा	62
सजदा हो तो ऐसा !	44	बुख़ार का तज़किरा ज़बान पर नहीं लाए	62
नमाज़ जारी रखी	45	रिज़्क़ में फ़राख़ी	63
अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो	45	शहादत की फ़ज़ीलत पाने का नुस्ख़ा	63
कामिल ईमान वाला	45	हर वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल	64
अदब व अख़्लाक़ सीखते थे	46	रिज़्क़ में बरकत का बे मिसाल वज़ीफ़ा	64
फ़राइज़ का एहतिमाम करो	47	कारोबार चमकाने का नुस्ख़ा	64
नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज की अहम्मिय्यत	47	अल्लाह व रसूल का मह़बूब	65
मक़ामे फ़िक्र	48	अल्लाह व रसूल के ना पसन्दीदा बन्दे	68
गुनाहों से पाक होने का त़रीक़ा	49	गुस्सा मत करो	69
जन्नत में दाख़िल होगा	49	गुस्सा किसे कहते हैं ?	69
अच्छी त़रह़ गुस्ल करने का त़रीक़ा	50	गुस्सा न करो	70
किसी पर ज़ुल्म मत करो	51	गुस्सा न करने से क्या मुराद है ?	70
ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरा होगा	51	गुस्सा न करते	71
मज़लूम की बद दुआ़ मक़्बूल है	52	बेहतर कौन और बुरा कौन ?	71
मज़लूम जानवर की बद दुआ़	53	बे नज़ीर व बे मिसाल बुर्दबारी	72
घोड़े ने कभी ठोकर क्यूं न खाई ?	53	येह बुढ़ापे की वज्ह से है	72
खोटा सिक्का	54	गुनाह से नफ़रत है गुनाहगार से नहीं	73
अपनी जान और मख़्लूक़ पर रह़्म करो	55	बुर्दबारी हर दर्द की दवा है	73
मिस्कीन पर रह़्म करो	55	ह़राम से बचो	74
कबूतरी की ख़ातिर ख़ैमा नहीं उखाड़ा	55	दुआ़ क़बूल नहीं होती	74
तीनों रोटियां कुत्ते को खिला दीं	56	चालीस दिन तक क़बूलिय्यत से मह़रूम	75
गुनाहों में कमी कैसे हो ?	57	दुआ़ क़बूल न होने का सबब	75
इस्तिग़फ़ार और तौबा में फ़र्क़	57	माले ह़राम का वबाल	76

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
बे सब्री के बाइस ह़लाल रोज़ी से मह़रूमी	76	अच्छे और बुरे अख़्लाक़ की ता'रीफ़	94
तफ़्तीश न की जाए	77	सब्र से बेहतर कोई शै नहीं	95
परहेज़गारी या बद गुमानी	79	एक बुज़ुर्ग और क़ैदी दोस्त	96
रुस्वाई से बचने का त़रीक़ा	80	सब कुछ तक़्दीर में लिखा हुवा है	97
कामयाब कौन ?	80	बीनाई मिल जाने से ज़ियादा पसन्द है	97
शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त का मत़लब	80	अगर मगर न करो	97
यूं बदलते हैं बदलने वाले	81	अपने नसीब पर ख़ुश रहने वाली औ़रत	99
सख़्त तरीन गुनाह	83	तदबीर को तर्क न कीजिये	99
पर्दापोशी	83	सब से बड़ी बुराई	100
ऐ़ब पोशी करने वाले की क़ियामत के दिन पर्दापोशी होगी	83	बद अख़्लाक़ क़ाबिले रह़्म है	100
अब वोह औ़रत ग़ैर हो चुकी है	84	बुख़्ल किसे कहते हैं ?	101
तीन आ'माल ज़रूर करते	85	बख़ील जन्नत से दूर है	101
"असम" के त़ौर पर मश्हूर होने की वज्ह	85	ख़ुश त़ब्अ़ मेहमान और बख़ील मेज़बान	102
बर्हना करने से बढ़ कर गुनाह	86	पोशीदा सदक़े और सिलए रेह़्मी की फ़ज़ीलत	102
पर्दापोशी की मुख़्तलिफ़ सूरतें और इन के अह़काम	86	सब से मज़बूत़ मख़्लूक़	103
गुनाहों से मुआ़फ़ी का नुस्ख़ा	88	पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है	104
रोने की फ़ज़ीलत	88	थैली तो मिलती मगर देने वाले का पता न चलता	104
फ़िरिश्तों के आंसू	88	बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला	104
रोने से दिलों का ज़ंग दूर होता है	89	आ'माल छुपाने का एहतिमाम करते थे	105
अकेले रोने से गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ?	89	सिलए रेह़्मी की ता'रीफ़	106
रोने के अस्बाब	90	बेहतरीन आदमी की ख़ुसूसिय्यात	106
बड़ा मर्तबा मिलेगा	90	12 हज़ार दिरहम रिश्तेदारों को बांट दिये	107
आ़जिज़ी का इन्आ़म	90	सिलए रेह़्मी करने के 10 फ़ाएदे	107
बुज़ुर्ग मेहमान की आ़जिज़ी मरह़बा !	91	नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये	108
बीमार गुनाहों से पाक हो जाता है	91	दोज़ख़ की आग कौन सी चीज़ बुझाती है	108
तुझे येह ने'मत बिन मांगे मिली है	92	मौत के वक़्त रोने का सबब	108
बीमारी नसीह़त है	92	नफ़्ल रोज़ों के 8 मदनी फूल	109
सब से बड़ी अच्छाई	93	नेकी की दा'वत देने का जज़्बा मिला	111
हुस्ने अख़्लाक़ की अहम्मिय्यत	94	मआख़िज़ो मराजेअ़	113

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133042
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2-45-72-786

www.dawateislami.net

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net